CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाराणसी में
अष्टोत्तरशत भागवत
पारायण अवसरपर
पं .श्री.विश्वनाथ शास्त्री दातार
का पूजन करते समय....

कॅनडा में स्वामी नारायण
संप्रदाय के अध्वर्यु
पू. प्रमुख स्वामीजी महाराज
आचार्य श्री
को आशीर्वाद देते हुए।

निम्बार्क पीठाधीश्वर
पू. श्री. श्री जी महाराज का
स्वागत करते हुए
आचार्य श्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(3.2) MS

|| धर्मश्री ||

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का मुखपत्र

वर्ष ५ . अंक ४ आश्विन शु. १५ सं. २०६१, शक १९२६, आक्टोबर २००४

• अनुक्रमणिका •

• संपादक मंडल •

संपादक : डॉ. प्रकाश सोमण
कार्यकारी संपादक : श्री. भारवि खरे
मार्गदर्शक : डॉ. अशोक कामत, श्री. पुष्करलाल केडिया
डॉ. संजय मालपाणी, श्री. भागीरथ लड्ढा
सहयोगी : पं. महेश व्यास, श्री. मधुसूदन चंदुरकर (जोशी)
डॉ. योगेन्द्र मिश्र
मुद्रक : मंदार ट्रेडर्स, ७५५ कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष : २४४५६१४२

दीपावली की
आलोकमयी निशा
एवं नववर्षकी
मंगलमयी उषा
सभी के लिये
सुख-शांति-समृद्धिमय हो।

इस अंक के यजमान हैं
श्री. मुरलीधरजी प्रेमसुखजी झंवर (सातारा)
अमृत महोत्सवकी हार्दिक बधाई !
साभिनन्दन धन्यवाद !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

- श्री रामगिरि महाराज

भारत के सभी त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पुनीत पर्व के साथ हमारा युगों-युगों का वह इतिहास ओतप्रोत है जिसकी आज के स्वतंत्र वातावरण में हमें अधिक आवश्यकता है। यही कारण है कि जिस उल्लास और उत्साह के साथ विश्वभर में यह त्यौहार मनाया जाता है वह अन्य पर्वोंपर कम ही दिखाई देता है। आप किसी भी प्रांत में चले जाइए। इस अवसर पर सर्वत्र ही आपको नव उत्साह और एक नई उमंग के दर्शन होंगे। अमा की वह अंधकारमयी रजनी असंख्य दीपों की उज्ज्वल ज्योतिसे जगमगा उठती है। स्त्री, बालक, वृद्ध, युवा सभी आनंद विभोर हो वरदायिनी माँ लक्ष्मी की उपासना करते हैं और माँसे अपने प्रदीपालोकित गृह में पधारने की अभ्यर्थना करते हैं। नये-नये वस्त्र खरीदे जाते हैं, मिष्टान्न बनाये जाते हैं।

इन सब की पृष्ठभूमि क्या है ? इन प्रथाओं का मूल कहाँ से आरंभ होता है और दीपावली का वर्तमान रूप कब से प्रारंभ हुआ इस बारें में कुछ भी कहना असंभव है। पुराणेतिहास में हमें दीपावली के संबंध में अनेक आख्यान मिलते हैं। स्कन्द, पद्म और भविष्य पुराण में इसके संबंध में भिन्न-भिन्न मान्यताएं हैं। कहीं महाराज पृथुद्वारा पृथ्वी दोहन करके दीन-हीन भारत का अन्य धनादि प्राप्ति के साधनों के नवीकरण द्वारा उत्पादन शक्ति विशेष वृद्धि करके समृद्ध तथा सुखी बना देने पर उनकी इस अपूर्व सफलता के उपलक्ष्य में दीपावली का प्रादुर्भाव होना लिखा है तो कहीं आज के दिन समुद्र मंथन से भगवती लक्ष्मी के जन्म होने और इस की प्रसन्नता के उपलक्ष्य में लोगों द्वारा इस उत्सव को मनाये जाने का उल्लेख है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को क्रूर अत्याचारी शासक नरकासुर का वध करके उसके बन्दीगृह से अनेक राजाओं और १६००० राजकन्याओं का उद्धार करने पर भगवान श्रीकृष्ण का अभिनंदन करने के उपलक्ष्य में यह दीपावली उत्सव है।

दीपावली पर होनेवाले स्वच्छता, सम्पादन, भवन-सज्जा, लक्ष्मी-पूजन, बही-वसनों का प्रचलन, दीपमाला आदि सभी कार्य रहस्यपूर्ण तो हैं ही किंतु अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण भी। पुराणों में इस रात्रि को 'महारात्रि' शब्द से स्मरण किया है और साधकों के लिए प्रमुख पर्व माना है। आज भी साधक इस महारात्रि में जागरण करते हुए अपने जप मंत्र को सिद्ध किया करते हैं। इस पर्व पर किया जानेवाला प्रकाश मानव हृदय की जिस चिरंतन भावना का प्रतिरूप है, वह है अन्धकार सह भटकते मानव समाज को प्रकाश दान कर सन्मार्ग पर लाने की भावना ! प्रकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञान का दूसरा रूप है। दीपावली के दिन सहस्रों दीपों को प्रज्ज्वलित कर मानों हम अपनी इसी भावना को प्रतिफलित हुआ पाते हैं। इससे हमारे हृदय में असीम सन्तोष का प्रादुर्भाव होता है। इसीलिए शास्त्रों में यूं तो सम्पूर्ण कार्तिक मास भर ही, किंतु विशेषतया इन दिनों में दीपदान का बड़ा माहात्म्य वर्णन किया है। हम अपने घरों को आलोकित करने के साथ-साथ कुँआ, मंदिर, तालाब, धर्मशाला, चौराहा आदि उन सार्वजनिक स्थानों को भी प्रकाशमय करना नहीं भूलते जिनसे हजारों प्राणी लाभान्वित होते हैं। कार्तिक में दीपदान के विशेष शास्त्रीय विधान का अर्थ स्पष्ट है कि अभी-अभी समाप्त हुई वर्षा ऋतु से उत्पन्न अनके विषैले जंतु इन लावारिस सार्वजनिक स्थानों में व्याप्त हो जाया करते हैं। दिन में तो वे सूर्य के प्रकाश से दिखाई देते हैं परन्तु रात में वहां प्रकाश कौन करे? अतः समशीतोष्ण मास भर प्रकाश रखने के लिए शास्त्रों ने ऐसा विधान किया है।

इस पर्व का एक उद्देश्य देश के स्वास्थ्य को समुन्नत करना भी है। वर्षा ऋतु में धूप की कमी तथा विशुद्ध जलाभाव के कारण वायुमण्डल में रोग-कीटाणु व्याप्त हो जाते हैं। मच्छर के बाहुल्य से ऋतुज्वर (मलेरिया) आदि रोग विशेष रूप से फैलते हैं और नागरिक-स्वास्थ्य अपने स्वाभाविक स्तर से निम्न हो जाता है। इस प्रकार स्वास्थ्यदूषक कारणों को दूर करने में इस पर्व से बड़ा सहयोग प्राप्त होता है।

दीपावली पर्व जीवन में सौंदर्य पक्ष का उत्थान कर मानव जीवन-स्तर को उन्नत बनाने में भी सदा से योग देता रहा है। इस अवसर पर घरों की सज्जा के लिए विविध प्रकार के चित्रों, प्रस्तर तथा मिट्टी की मूर्तियां आदि को खरीदकर हम चित्रकला, मूर्तिकला आदि कलाओं को प्रोत्साहन ही नहीं देते, अपितु अपने को भी समुन्नत करते हैं। दीपावली पर होनेवाले क्रय-विक्रय का यदि लेखा-जोखा लगाया जाय तो उसकी संख्या अरबों रुपयों में गिनी जानेलायक बनेगी। क्या दीपावली की एक ही रात में होनेवाले अरबों रुपयों के इस विनिमय का राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ? अवश्य पड़ता है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से यह लक्ष्मी का वास्तविक पूजन है हम इस बहाने से राष्ट्र की अमित संपत्ति का वितरण राष्ट्र में ही कर देते हैं। इस प्रकार- दीपावली पर्व राष्ट्र की लक्ष्मी का राष्ट्र में ही विनियोजन कर राष्ट्र को समृद्ध बनाने में महत्तम सहयोग देता है।

□ ■ □

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति
न तत् सत्यं यच्छलेनानुविद्धम्॥

- महाभारत

(जहाँ ज्ञानवृद्ध पुरुष उपस्थित नहीं वह सभा नहीं ! जो धर्म का प्रतिपादन नहीं करते वे ज्ञानवृद्ध नहीं ! जिसमें सत्य नहीं वह धर्म नहीं! और जिसमें छिपा छिपी है वह सत्य नहीं।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

|| जीवन श्रेष्ठ बनाना है ||

- आचार्य किशोर व्यास

प्रत्येक संस्कार शिबिर का नारा है, 'क्यों शिबिर में आना है, जीवन श्रेष्ठ बनाना है।' शिबिर में जाने का यही एकमात्र उद्देश्य होना चाहिये। शिबिर में जाकर यही इच्छा जाग्रत हो और यही इच्छा वापिस आने पर सदैव साथ रहे तो जीवन अपने आप श्रेष्ठ हो जायेगा। भगवान ने जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिये जो उपकरण दिया है, वह हमारा शरीर है। परमात्मा ने हमें यह मनुष्य जन्म देकर हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। उसका सदुपयोग करके उस परमात्मा के अनंत उपकार का ऋण चुकाना चाहिये। हरदम अच्छे विचार करते हुए सत्कार्य करनेवाला अपने स्व को पहचानेगा और प्रत्येक वासना का त्याग करके देह की चिन्ता छोड़कर देही के बारे में सोचेगा।

देह नित्य नहीं है, देही नित्य है। जैसे हम कितने ही कपड़े पहनते हैं और बाद में कुछ समय बाद उनका त्याग करते हैं। ठीक वैसे ही यह आत्मा अनेक देहों को बदलती है। बुद्धिमान वह है जो इस देह का अच्छे से अच्छा उपयोग करके अमर हो जाये। भोगों का उपभोग तो सभी प्राणी करते हैं लेकिन मनुष्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है। अतः वह भोगों से ऊपर उठकर इस देही की चिन्ता करें। जो वासनाओं की गंदगी को इस देह से साफ करे, वही श्रेष्ठ मानव है।

मनुष्य का जीवन चार प्रकार का होता है - पामर, विषयी, मुमुक्षु और मुक्त जीवन। पामर जीवन में वह अपने और अपने कुटुंब के लिये रात दिन चाकरी करता है और

जैसे वैसे व्यतीत करता है। वह दूसरों के लिये या भगवान के लिये सोचता ही नहीं। विषयी जीवन में मनुष्य बहुत कमाता है और सभी वासनाओं की पूर्तिको सुख मानकर उसमें लिप्त होता है। वह इसे भी श्रेष्ठ जीवन मानता है। मुमुक्षु जीवन में वह कमाता तो बहुत है लेकिन साथ साथ मुक्ति के लिये आध्यात्मिक साधन करता है। वह प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का दर्शन करके उसपर दया करके सत्कार्य करता है और अच्छा जीवन व्यतीत करता है। मुक्त जीवन वह है जो प्रत्येक वासनाओं से मुक्त हो। यही सच्चे साधु संतों का जीवन रहता है।

तप आवश्यक

जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिये तप आवश्यक है। तप का अर्थ दृढ़ निश्चय और अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण। किसी काम को निष्ठा से करना ही तप है। युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि अपने धर्म का पालन करना ही श्रेष्ठ तप है। यहां धर्म का अर्थ कर्तव्य है। No fears, No favours, यही तप का लक्षण है।कोई भी व्रत करना तप ही है। जितनी तीव्रता से जो तप करेगा, उतन तीव्रता से उसका तेज बढ़ेगा। पुराने तपस्वी अपनी तपस्या से तेजोमय हुए थे। आहार सात्विक होने से ही तेज बढ़ेगा। बुरे संकल्प से तप करने का फल तो मिलता है लेकिन उसका अंत बुरा होता है। इससे अंतःकरण अशुद्ध होता है। असुरों ने तप करके तो फल पाया लेकिन उनका अंत बुरा ही हुआ।

तप तीन प्रकार के है - सात्विक, राजस और तामस।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक प्रकार के तप के और तीन प्रकार है। कायिक, वाचिक और मानसिक। सात्विक तप सबसे श्रेष्ठ है जिससे कई सद्गुण आते हैं। सात्विक तप में इष्ट देवता की मनःपूर्वक श्रद्धा से पूजा करनी चाहिए। ब्राह्मणों का, गुरुओं (अपने से श्रेष्ठ) का और ज्ञानियों का आदर करना चाहिये। ब्राह्मण कैसा भी हो उसका आदर ही होना चाहिये। ब्राह्मण छोटा हो या बड़ा हो, वह आदर का पात्र है। वैसे ही सभी गुरुओं का आदर होना चाहिये। गुरु आखिर अपना कल्याण ही करेंगे ऐसी श्रद्धा होनी चाहिये। सभी ज्ञानियों को भी आदर करना चाहिये। व्यासमुनि के शुकमुनि पुत्र होते हुये भी शुकमुनि के आने पर व्यास मुनि श्रद्धा से खड़े हो जाते थे। जिस देश में ब्राह्मणों का, गुरुओं का और ज्ञानियों का आदर है, वह देश महान ही होगा।

राजसी तप में दंभ से तप किया जाता है। इसमें अहंकार होता है। मन निर्मल नहीं होने से उसका फल भी उत्तना अच्छा नहीं रहता। राजा विश्वमित्र राजसी तपस्या करके मुनी विश्वमित्र कहलाये, सब सिद्धियां प्राप्त की, लेकिन वे मुनि वसिष्ठ के समान श्रेष्ठ नहीं हो सके क्योंकि उनके तप में अहंकार था। जब उन्होंने अपना अहंकार छोड़कर सात्विक तप किया तभी वे महर्षि कहलाये। जीवन में अनुशासन आवश्यक है, वही योगी हो सकता है।

तामसी तप में कल्याणकारी मन वासनाओं से लिप्त रहता है। ऐसा तप करके भी उसका फल नहीं होता। सभी असुरों का तप तामसी तप था। अतः उनकी तपस्या का फल मिलकर भी वे असुरी वृत्ति में लिप्त होकर खुद का विनाश ही किया।

स्वस्थ रहो ।

भगवान पातंजलि ने वेद में जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिये स्वस्थ जीवन की सीख दी है। A sound mind in a sound body and not in a Round body. वेदकाल में ऋषि-मुनियों का जीवन हजारों वर्ष रहता था। ज्ञानेश्वर महाराज के समकालीन चांगदेव महाराज १४०० वर्ष जीवित रहे। १८ वीं, १९ व्रीं सदी में भी अनेक लोग सौ वर्ष आयु के रहे। मनुष्य जीवन यह भगवान की दी गयी उत्तम प्रसादी है। अतः उसे भोगों में समाप्त मत करो, नहीं तो अगला जन्म निम्न श्रेणी का ही मिलेगा। बाद में पश्चाताप करने से क्या लाभ? हमारे कर्म ही हमारे साथ जाते हैं और उसके अनुसार हमें हमारा अगला जन्म मिलता है। इसके लिये अच्छी आकांक्षा और अच्छी जीवन शैली होनी चाहिये। अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिये इस देह को स्वस्थ रखना चाहिये। आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ देह की व्याख्या सम दोष है। हमारे शरीर के त्रिदोष - वात, पित्त, कफ सम प्रमाण में हों। देह अंतिम साध्य नहीं, वह सर्वोत्तम साधन है। उसे कार्यक्षम रखना चाहिये। उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। सत्कर्म करते-करते कई सौ वर्ष तक जिओ, यह ईशावास्य उपनिषद् में कहा गया है। प्रारब्ध से कुछ कम ज्यादा हो सकता है लेकिन अपने मानवकृत दोषों से उसे अस्वस्थ मत करो, उसे सत्कार्य में लगाओ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के लिये शरीर स्वस्थ रखना आवश्यक है। Stich in time, saves nine । समय पर शरीर का ध्यान रखो तो वह तुम्हारा ध्यान रखेगा। शरीर का आरोग्य ठीक रखने के लिये योग, जप, तप के साथ भोजन, कार्य, निद्रा (सभी प्रर्याप्त, कम या ज्यादा नहीं) आवश्यक है। शरीर की नाड़ियां सुचारू रूप से चलनी चाहिये। इसके लिये ज्यादा से ज्यादा निसर्ग के सानिध्य में रहना चाहिये। आजकल लोग बनों में जाकर निसर्ग का आनंद लेते हैं। निसर्गोपचार या आयुर्वेद उपचार का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। भीतर की गंदगी जब तक साफ नहीं होगी, तब तक शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा। आसन और प्राणायाम से नाड़ी शोधन होता है और शरीर की गंदगी बाहर निकलती है। जीवन नियमित होना चाहिये और दिनचर्या के अंतर्गत होना चाहिये। आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या, रात्रिचर्या और ऋतुचर्या ठीक होनी चाहिये। आयुर्वेद में इसका सविस्तर वर्णन है। रोज के कार्यों में नियम होना चाहिये। रोज निद्रा ६ से ७ घंटे तक ठीक है लेकिन यह कभी भी लेना उपयुक्त नहीं है। रात्रि में ११ से ३ की निद्रा प्रकृति के अनुसार आवश्यक है। अतः रोज १० से ४ बजे तक नींद लेनी चाहिये। इससे शरीर में पित्त बढ़ेगा नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मानसिक संतुलन भी ठीक रहेगा।

आहार नियंत्रण

भोजन में आवश्यक तत्व का महत्व बहुत है। कैसा भी अन्न खाने से शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा। जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन और तन। अन्न का एक भाग मन को प्रभावित करता है। अतः जैसा अन्न खाते हैं, वैसा स्वभाव बनता है। भारतीय संस्कृति में हजारों वर्ष पहले यह सब हमारे ऋषियों ने लिखा है और विश्व के लोग अब उसे बता रहे है, सिद्ध कर रहे हैं। हमारा जीवन पाँच कोषों से बना है - अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमेय, आनंदमेय। यह बहुत बड़ा विषय है और यहां इसके गहराई तक जाना आवश्यक नहीं। क्या खा रहे हैं, क्या पी रहे हैं और क्यों खा-पी रहे हैं इसका ध्यान रखना अति आवश्यक है। हम रोज जितना नमक और शर्करा खाते हैं, उसके आधे से भी कम शरीर को आवश्यक है और बाकी का हम डॉक्टर के लिये खा रहे हैं। यह धीरे-धीरे शरीर में विष जमा करने जैसा है। अन्न का प्रत्येक ग्रास खूब बार चबाकर खाना चाहिये। लेनिक आजकल तो जल्दी खाना अच्छा लक्षण मानते हैं। हम जो खाना खाते हैं उससे आधा भी सात्विक आहार शरीर के लिये बस हो जाता है। आयु, बल, सत्व और सुख के लिये ही भोजन करना चाहिये। सात्विक आहार उत्तम, राजसी मध्यम और तामसी कनिष्ठ। सात्विक आहार से आयु और आरोग्य बढ़ता है, राजसी आहार से रोग बढ़ता है और तामसी आहार से शरीर और मन दोनों भी दुर्बल होते हैं। देशी गायका घी शरीर के लिये अति आवश्यक है क्योंकि वह शरीर को स्निग्धता प्रदान करता है। जैसे मशीन में तेल की आवश्यकता होती है, वैसे ही शरीर में स्निग्धता की आवश्यकता होती है लेकिन वह अति मात्रा में न हो।

सत्कर्मयोग यम-नियम

स्वस्थ शरीर को अच्छे कार्य के लिये प्रयुक्त करना चाहिये जैसे जप, तप, ईश्वर आराधना, जनकल्याण आदि। स्वस्थ शरीर से यदि वासनामय जीवन बिताया तो शरीर मिट्टी में जल्दी मिल जायेगा। बाह्य सृष्टि को ही सुख मानकर हमने आंतरिक वासनामय सृष्टि निर्माण की और उसे ही वास्तविक सृष्टि मान ली। इसीलिये हमारा मन एकाग्र नहीं होता। मन एकाग्र करने के लिये सात्विक लक्ष्य आवश्यक है। यदि लक्ष्य उदात्त हो तो ही मन एकाग्र और समर्पित रहता है। महान लक्ष्यं की पूर्ति में काम करने से क्षुद्र विचार कभी नहीं आते। एकाग्रता से विषय वासना का विस्मरण हो ही जाता है।

शारीरिक तप में शौच, ब्रह्मचर्य और अहिंसा अंतर्भूत है। जीवन में शौच का बहुत अधिक महत्व है। शौच में शरीर की स्वस्थता, शुद्धता और पवित्रता अंतर्भूत है। शौच में शरीर का, परिसर का, आहार का और अन्न का ध्यान रखा जाता है। सार्वजनिक शौच के लिये प्रत्येक की मानसिकता होनी चाहिये। उसके लिये समाज के प्रत्येक की जिम्मेदारी है। सिर्फ सख्त कानून बनाकर इसका समाधान नहीं निकल सकता। स्पर्श से आंतरिक तरंगें और कीटाणुओं का संक्रमण होता है। अतः भोजन और पूजा के समय एक दूसरे का स्पर्श न होने दे। इतना ही नहीं जमीन का भी स्पर्श नहीं होना चाहिये। हमें एक दूसरे के वस्त्र भी धारण नहीं करना चाहिये। प्रत्येक के शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध और अलग-अलग ऊर्जा निकलती है। अंधे और बहरे लोग सिर्फ प्रत्येक की विशिष्ट गंध के कारण ही उनको पहचान लेते हैं। एक ही जगह बैठकर कार्य करने से या जप करने से वहां के परमाणु में बदल होते रहते हैं। उस पर उनके संस्कार होते हैं। संतों की समाधि से कुछ तरंगें सतत निकलती हैं।

वासनाओं की दलदल से ऊपर उठना ही वास्तविक ब्रह्मचर्य है। गृहस्थ भी ब्रह्मचारी हो सकता है यदि वह धर्म के सभी नियमोंका पालन करें। हमारा मन पांचों इंद्रियों के झरोकोंसे (माध्यम से) वासनाओं में भटकते रहता है, उसे रोकनाही वास्तविक ब्रह्मचर्य है। महर्षि पातंजलि ने कहा है कि जो वेदों का अध्ययन करता है और वैसा आचरण करता है, वही ब्रह्मचारी है। ब्रह्म का अर्थ विशाल है, अतः ब्रह्मचारी का ध्येय भी विशाल होना चाहिये।

किसी को भी किसी भी प्रकार की चोट (मानसिक, वाचिक और कायिक) न पहुंचाना ही अहिंसा है। लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य के जीवन में कुछ हिंसा अपने आप और न समझते हुये हो जाती है और कुछ परिस्थिती अनुसार हो जाती है। सांस लेते समय और चलते समय कुछ जीव मर ही जाते हैं। दही, भाजी, धान्य आदि में भी कुछ जीवन रहते ही हैं। उनकी हिंसा अपने आप हो जाती है। लेकिन इस प्रकार की हिंसा से कोई पाप नहीं लगता। अतः अहिंसा को जीवन के व्यवहार के धरातल पर (शुद्ध भाव से) सोचना चाहिये। आततायियों को मारना हिंसा नहीं है। जीवन की रक्षा के लिये यदि कुछ जीव मारना भी पड़े तो वह हिंसा नहीं होती। राग, द्वेष और स्वार्थ को टालकर की गयी हिंसा अहिंसा ही है। भगवान कृष्ण ने गीता में यही हिंसा का अर्थ कहा है। कभी-कभी हम अहिंसक होते हुये भी यदि हम पर युद्ध लादा गया तो युद्ध करना यह अहिंसा ही है। हिंसा और अहिंसा का विचार विवेकपूर्ण होना चाहिये।

भक्ति की अनिवार्यता

जो तप करे वह तपस्वी और जो भक्ति करे वह भक्त। हिरण्यकशिपु तपस्वी था लेकिन वह भक्त नहीं था। भक्त भगवान में समर्पण करता है। श्रेष्ठ जीवन का अंतिम ध्येय श्रीराम ही है। सत्य को मीठी भाषा (मर्यादा) में ही बोलना चाहिये, नहीं तो वह कड़ुआ लगता है। किसी के भी सामने छोटा बनना अपमान नहीं। भगवान कृष्ण ने भी युधिष्टिर के राजसूय यज्ञ में जूठी पत्तलें उठायीं थीं। दुःखदायी परिस्थिति में सभी भोगों का त्याग करने से दुःखदायी परिस्थिति का निर्मूलन हो जाता है।

भगवान के पास जाते समय सभी को साथ लेकर जाना चाहिये। भगवान के दर्शन को जाते समय आळंदी से पंढरपुर दिंडी में जाना और तिरुपति ट्रेन से जाना, बहुत अंतर है। एक सत्व और तप का मार्ग है और दूसरा सकामना मार्ग हैं एक में आत्मिक आनंद है और दूसरे में सकामनाका आनंद है। जीवन में शरण्य भाव से भगवान के पास जाने से वह उन पर प्रसन्न हो जाता है। कृष्ण के पास अर्जुन शरण्य भाव से गये थे और दुर्योधन स्वार्थ भाव से। कृष्ण अर्जुन से ही प्रसन्न हुए और उसकी ही जीत हुई। संतों का समागम करना चाहिये। सच्चे भक्तों पर भगवान सदा अनुग्रह करते हैं, उनका चिंतन करते हैं और उन्हें दुःख में नहीं देख सकते। भगवान उनकी सिर्फ परीक्षा लेते हैं। जैसे सागर अपनी सीमा नहीं लांघता, वैसे संत भी कभी अपना विवेक नहीं लांघते।

जिस घर में भगवान की कोई पूजा नहीं होती, उस घर का अन्न खाना पाप है। वहां भोजन करना, कुत्ते के भोजन करने के बराबर है, ऐसा संत तुकाराम महाराज ने कहा है। नित्य पूजा करना भगवान की कृतज्ञता का द्योतक है। यदि किसी समय घर में बैठकर पूजा न कर सके तो मानस पूजा तो करनी ही चाहिये। भगवान को मन से प्रार्थना करना भी एक पूजा है। हां, चलते फिरते सिर्फ दिखावे के लिये भगवान को प्रणाम करना, प्रसाद और दक्षिणा चढ़ाना, पूजा नहीं होती। वह एक ढोंग है। भगवान इससे बहुत प्रसन्न नहीं होते। भगवान ने स्वतः कहा है कि यदि मुझे कोई श्रद्धा से पत्र-पुष्प भी चढ़ा दे तो मैं उसे पूजा मानकर उसपर प्रसन्न होता हूं। सत्पुरुषों का जीवन हमें आदर्श की ओर ले जाता है। जीवन को बदलने का सामर्थ्य हमारे ग्रंथों में है लेकिन उसके लिये हमें ग्रंथों का प्रामाणिकता से अभ्यास करके और उस पर चिंतन करके आचरण करना चाहिये।

भक्ति तीन प्रकार की होती है - रबर जैसी, घी जैसी और मधु जैसी। जैसे रबर को जब तक तानकर रखें, वह तनी हुआ रहती है और छोड़ने के बाद वह अपने मूल स्वरूप को आ जाती है, वैसे ही समय मिला तो भक्ति करली नहीं तो नहीं। यह रबर जैसी भक्ति है। घी को गरम किया तो वह कुछ देर पतला रहता है और बाद में वातावरण की ठंड से वापस ठंडा हो जाता है। घी जैसी भक्ति में जब भी कुछ धार्मिक कार्यक्रम में गये, भक्ति कुछ देर तक टिकी रहती है और बादमें सांसारिक कामों में लगते ही भक्ति रहती नहीं। मधु भक्ति में जैसे शहद किसी भी वातावरण में एक जैसा रहता है, वैसे मनुष्य हर परिस्थिती में भक्ति करते रहता है और वह उसे कभी नहीं छोड़ता। हमें सर्वदा मधुभक्ति ही करनी चाहिये तो जीवन का कल्याण होगा।

संकलनकर्ता

श्री. गणेशलाल तापड़िया, नांदेड

□ ■ □

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्मकाण्ड - मनुष्यमात्रका जीवन सुविहित रखनेका साधन

- डॉ. सौ. भाग्यलता पाटसकर,
सचिव, वैदिक संशोधन मंडल, पुणे

कर्मकाण्ड शब्द सुनतेही सुननेवाले की भौंएँ तन जाती हैं, इस विचारसे कि यह एक शुष्क, केवल तांत्रिक अथवा समय गँवानेका या तो बिना कामकी संपत्ति बेकार गँवानेकी कोई चीज है। हमें आज यही देखना है कि इसमें तथ्य क्या है, अगर कर्मकाण्ड इतनी बेकार चीज है तो यह अब तक कैसी टिक पायी । यह तो निःसंशय प्रकृति का नियम है कि जो चीज किसी कामकी नहीं वह नष्ट होती है। तो निश्चितही कर्मकाण्ड में ऐसा कुछ गुणविशेष है कि जो इसका बलस्थान है और जिसके कारण कर्मकाण्ड नामकी यह चीज दुनियाभरमें सर्वत्र विगत काल में थी, आनेवाले काल में रहेगी, व्यक्तिगत जीवन में रहेगी, समाज जीवन में रहेगी, धर्म में रहेगी, राजनैतिक बातों में रहेगी। कुछ हद तक बदलती जाएगी, कभी एक के स्थानपर दूसरी आयेगी लेकिन वह चीज रहेगी।

यहां हम यह देखना चाहते हैं, हमारे धार्मिक जीवन में जो कर्मकाण्ड है, कि इसकी विशेषता और सामर्थ्य क्या है?

१. कोई भी कर्मकाण्ड हो इसमें किसी न किसी प्रकार से संगठन की शक्ति होती है। कोई मनुष्य अकेला, किसी निर्जन स्थान पर कुछ भी कर्मकाण्ड नहीं कर सकता। कर्मकाण्ड चाहे वेद प्रतिपादित श्रौतकर्म का हो, चाहे सोलह संस्कारों जैसा गृह्यकर्मात्मक हो, किसी याग, हवन या स्वाहाकार के रूप में हो, या किसी व्रत के अथवा पूजा के या त्यौहार मनाने के लिए किया जानेवाला कुछ कर्मकाण्ड हो, हमेशा उसको संपन्न करने के लिए और किसी की आवश्यकता होती है। हमारे कामकाज के लिए किसी और की आवश्यकता प्रतीत होना, यही संगठन का प्रारंभ है। इसी भावना से समुदाय का रूपांतर समाज में होता है, नहीं तो वह 'भीड़' बनके रहता है।

कर्मकाण्ड एक ऐसा कर्म है, जो मानवमात्र के पूरे जीवन में अनिवार्य है। कर्मकाण्ड की धार्मिकता तो सुविख्यात है, वस्तुतः व्यक्तिगत जीवन में किया जानेवाला कर्मकाण्ड, यही उसके धर्म की या पंथ की एक पहचान है। किसी धर्म के या पंथ के अस्तित्व का यह (यद्यपि एकमात्र नहीं तथापि एक) प्रमाण है जिससे उस धर्म की दार्शनिक अवधारणाएं आसानी से समझी जाती हैं।

केवल व्यक्तिगत जीवन में ही कर्मकाण्ड है, ऐसी बात नहीं, सामाजिक या राजकीय प्रसंग विशेष में भी कर्मकाण्ड रहता है, जिसे उपचार या शिष्टाचार नामसे पहचाना जाता है। ध्वजारोहण या ध्वजवंदन जैसे सामाजिक प्रसंगों में होनेवाला कर्मकाण्ड हमसे परिचित है। चुने गये नये मंत्रिमहोदय का शपथग्रहण, कोर्ट में न्यायाधीश का आगमन; विद्यापीठों का समारंभ, ये सब राजकीय कर्मकाण्ड के कुछ उदाहरण हैं। यहां यह बात नहीं कि जिसके लिए (उदा. ध्वजवंदन के लिए) वे बातें (याने कतार में ठीक खड़े रहना, सावधान, विश्राम स्थितिका अभ्यास करना, झंडा ऊंचा जाने के बाद उसे सॅल्यूट करना) की जा रही हैं, उनके बिना ध्वजारोहण या ध्वजवंदन होगा कि नहीं। फिर भी वे सब कर्मकाण्ड करने का यथाशक्ति प्रयास किया जाता है। इस प्रकार का कर्मकाण्ड (चाहे इसे सेक्युलर कर्मकाण्ड कहा जाए) दुनिया में सभी देशों में किसी भी सरकार में होता है। आज किसी भी कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्ज्वालन से होता है, क्या बिना दीप प्रज्ज्वालन के कार्यक्रम शुरू नहीं होगा ? कर्मकाण्ड की यही अपरिहार्यता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि मनुष्य जीवन का कोई भी अंश कर्मकाण्ड से अस्पृष्ट नहीं। यह एक विशेष आश्चर्य की बात है कि यह कर्म धर्म की पहचान है वह सेक्युलर भी है।

कर्मकाण्ड की गरिमा इसमें है कि इससे मुख्य काम सिद्ध होने में एक अनुशासन का पालन किया जाता है, कमसे कम पालन की अपेक्षा तो की जाती है, कर्मकाण्ड का महत्त्व यह है कि "somehow get it done" यह अनिष्ट प्रवृत्ति वहां रह नहीं सकती। जैसा कि भगवान की आराधना या उपासना मुख्य कर्म है, जिसके लिए षोडशोपचार पूजा का विधान है। और न्यास, ध्यान जैसे कर्मों का भी विधान है। इसका अभिप्राय यह हो सकता है कि भगवान के सगुण रूप की उपासना अगर करनी है तो यह एक माध्यम या साधन अपने पास हैं। चलते, फिरते, खाते, बैठते हम सगुण रूप की उपासना करें ऐसा अगर कोई कहे तो ठीक नहीं होगा। चलते, फिरते किया जाता है, वह नामस्मरण है, या तो ध्यान है, उसका अपना खुद का महत्त्व है और उसकी बात ही अलग है। यहां तो सगुण उपासना की बात चल रही है, और 'फूल नहीं तो भी चलेगा, पानी नहीं तो भी चलेगा, खुद का स्नान नहीं तो भी चलेगा' इससे काम नहीं हो पाएगा। कुछ सीमा तक क्यों न हो लेकिन साधन अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण है। साधन साध्यसापेक्ष जरूर है, लेकिन किसी साध्य के लिए, परंपरा ने अगर कुछ साधन बताया है, तो उसी साध्य के लिए अपनाना चाहिए। कर्मकाण्ड से इस साध्य-साधन विवेक का पता चलता है, साधक की अपनी मर्यादा के प्रति सचेत रहता है और साथ ही साधन की शुचिता का विचार भारतीय मनीषियोंने विशेष रूप से किया, इसका मूलाधार भी समझ में आता है।

हमारे हिंदू कर्मकाण्ड के बारे में - श्रौतकर्मों से लेकर आजतक - मुझे एक और विशेषता का पता चला है। इसमें बहुत वस्तुओं की या विविध सामग्री की आवश्यकता है। न केवल हमारे परिवेश में आनेवाली, भौतिक रूप में विद्यमान वस्तुएं अपितु तिथि, वार, नक्षत्र, मुहूर्त जैसी चीजें भी इसी 'चाहिए' वाली सामग्री में हैं। जिनका एक दूसरे से कुछ संबंध नहीं है, ऐसी चीजें-जैसै कि किसी देवता का स्तोत्र, मंत्र, उसका अंक, उसका फूल, रंग, भोग, पूजा की तिथि विशेष जब, तय की जाती है तो समझना कि इसमें अवश्य कोई संबंध है। किसी तिथि और लाल फूल इसमें संबंध जिन्होंने देखा, वो लोग निःसंशय द्रष्टा थे। ब्राह्मण ग्रंथों में इस प्रकार की सामग्री में 'बंधुता' - एक दूसरे से संबंधित रहने का भाव - देखनेवाले, वे कर्मकाण्डी वस्तुतः दार्शनिक ही हैं। अलग वस्तुओं में इस प्रकार का संबंध उन्होंने देखा, जो 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' इस अनुभव द्वारा मुखरित हुआ।

किसी भी धार्मिक कर्मकाण्ड का आप निरीक्षण कीजिए, पूरा कर्मकाण्ड यह सचेत मानव ने अचेत वस्तुओं से या तो स्वयंने स्वेतरों से किया हुआ एक संवाद है। दैनिक पूजाविधान देखिए, जिसमें आदमी घंटासे, अक्षतोंसे, दीपसे संवाद करता है। इससे पूरा कर्मकाण्ड interractive होता है। इसमें वस्तुओं का मानवीकरण है और साथ ही साथ मानव का साधना भाव है। कर्मकाण्ड की इसी विशेषता के करण वह मनुष्यमात्र को व्यस्त रखने में सफल हुआ है।

हो सकता है कि यज्ञीय कर्मकाण्ड की पूर्वावस्था में वह सृष्टि का रहस्य जानने का प्रयास करनेवाला प्रयोक्ता होगा। जैसे कोई शास्त्रज्ञ अपनी प्रयोगशाला में बैठकर कॉचके प्रिझमसे कोई प्रकाश रेखा को एक ओरसे दूसरी ओर भेज कर सृष्टि के इन्द्रधनुष्य का रहस्य खोजता है, उसी प्रकार विशेषतः वेदोक्त श्रौतयज्ञोंसे सृष्टि के रहस्यों की सुलझाने का प्रयास किया गया होगा। यह मेरा तर्क है, वह गलत भी हो सकता है, लेकिन मनीषियोंसे प्रार्थना है कि वे उस पर विचार करें।

मेरे इस तर्क का आधार यह है कि कोई भी श्रौतयज्ञ का प्रयोग देखनेसे ऐसा लगता है कि इस कर्मकांडने भौतिकविज्ञान के, समाजविज्ञान के, वनस्पतिविज्ञान के, ज्योतिष के, रसायन के कई तत्त्व अपनाए हैं। किसी के मन में आया यह करो और वह किया जाए, ऐसी बात नहीं है।

परिवर्तनक्षमता यह कर्मकाण्ड का एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जिसके कारण कर्मकाण्ड कभी विनष्ट नहीं हुआ, न ही होगा। बात यह है कि किसी भी कर्मकाण्ड का अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक प्रयोजन होता है। उदा. राष्ट्र के प्रति अस्मिता और गौरव का प्रकटन, ध्वजवंदन का किसी भी कार्यक्रम के लिए उचित माहौल बनाना, दीपप्रज्ज्वालन आदि का प्रयोजन है। उसी प्रकार समाज संघटन, प्रकृति के साथ सहभाव, आध्यात्मिक उन्नति ये कुछ प्रयोजन होते हैं, जो कुछ व्रत, त्यौहार जैसे कर्म के पीछे हैं। कर्मकाण्ड तो निःसंशय स्थितिकाल में किया जाता है, जिसमें परिवर्तन अनिवार्य है। प्रयोजन मन में रखकर और परिवर्तनवशात् प्राप्त नयी स्थिति को समझकर बहुत सोच समझकर धीरे-धीरे कर्मकाण्ड में बदल हो जाता है। बाह्यरूप - जो कर्मरूप है वह बदल गया लेकिन तत्त्व वही है, इसका पता बाद में चलता है। इसलिए कर्मकाण्ड का इतिहास है। यह काम समाज के विचारशील शास्त्रकार करते हैं। हमारी परंपरा में यह काम स्मृति और धर्मशास्त्र के ग्रंथों ने किया। मेरे मतमें इस बदल का यह भी एक अभिप्राय है कि जो कर्मकाण्ड कुछ तत्त्व से चलता है, या जिसके पीछे का तत्त्व जीवित है, वही यह बदल सकता है। कर्मकाण्ड में तत्त्व है। इसमे बदलाव करनेवाला उस समाज, वहां के विद्वान उस तत्त्व के प्रति सचेत हैं। बदलाव का शुरू में विरोध होता है, और कुछ लोग तत्त्व को छोड़कर बाह्य रूप से चलते हैं वे बदलाव को स्वीकारते नहीं, वही लेकर बैठते हैं। धीरे-धीरे वहीं कर्मकाण्ड पुराना या कर्मठ हो जाता है। भिन्न-भिन्न धर्म, जाति, जनजातियों के कर्मकाण्ड के इतिहास का परिशीलन करनेसे यही पता चलता है कि कर्मकाण्ड किस हद तक बदलें, क्यों, कब और कैसे ये सब उस समाजपर व वहां के मनीषियोंपर निर्भर है, जो उसके तत्त्व के प्रति सचेत है।

मैं यह नहीं कहना चाहती कि दुनिया भरके कर्मकाण्ड की यही विशेषताएं हैं। और भी हो सकती हैं, लेकिन वैदिककाल से लेकर आज तक जो कर्मकाण्ड का इतिहास है उसमें ये विशेषताएं दिखाई देती हैं। हमारा सौभाग्य यह है कि जिसको कर्मकाण्ड की गरिमायुक्त पहचान है, ऐसी परंपरा के हम संवाहक हैं। □ ■ □

कॅनडा में संत श्री ज्ञानेश्वर आश्रम का भूमिपूजन

गत जून तथा जुलाई मास में पू. आचार्य स्वामी के कॅनडा तथा अमेरिका की धर्मयात्रा में कथा प्रवचन कार्यक्रमों का आयोजन संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल (कॅनडा) द्वारा किया गया। जिसके अंतर्गत ब्रॅम्प्टन में संत श्री ज्ञानेश्वर आश्रम का भूमिपूजन पू. आचार्य स्वामीजी के करकमलों द्वारा तथा मेयर सुसॅन की प्रेरक उपस्थिति में हुआ। संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल (कॅनडा) के प्रमुख श्री अरविंदजी लाल ने सभी उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। आश्रम निर्माण के सहायता के लिए जयपूर फायनान्सियल कंपनी की ओरसे दि. १६ जुलाई को गोल्फ प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। दि. ४ जुलाई से ११ जुलाई तक ऑंटॅरिओ में पू. आचार्य स्वामीजी के श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामीजी के वाणी का आस्वादन करने के लिए भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्त्रद्रष्टा आचार्य वसिष्ठ

अध्यात्म - ज्ञान तथा वैराग्य, शम-दम, तितिक्षा, अपरिग्रह, शौच, तप, स्वाध्याय एवं संतोष और क्षमा की प्रतिमूर्ति आचार्य वसिष्ठ के माङ्गलिक नाम से शायद ही कोई अपरिचित होगा। आपको अपनी दीर्घकालीन समाधिरूप साधना में भगवद्विग्रहरूप वैदिक ऋचाओंका साक्षात् दर्शन हुआ था, इसीलिए आप 'मन्त्रद्रष्टा' कहलाते हैं। आपकी सदाचारपरायणता तथा कर्मयोगपरायणता न केवल निवृत्तिमार्ग के साधकों के लिये ही, अपितु प्रवृत्तिमार्गावलम्बियों के लिये भी सदासे अनुकरणीय रही है। आपका जीवन-दर्शन आदर्श की पराकाष्ठा का भी अतिक्रमण कर जाता है, इसी कारण महर्षि वसिष्ठ का स्थान सभी मन्त्रद्रष्टा आचार्यों में अन्यतम स्थान ग्रहण करता है। आपको वेदों के अनेक सूक्तों एवं मन्त्रों के प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं। विशेष रूपसे दस मण्डलों में विभक्त ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के आप द्रष्टा कहे जाते हैं, इसीलिए ऋग्वेद का सप्तम मण्डल 'वासिष्ठमण्डल' कहलाता है।

महर्षि वसिष्ठजी की महिमा सर्वोपरि है। वेदों तथा पुराणेतिहास-ग्रंथों में महर्षि वसिष्ठजी का मङ्गलमय चरित्र बड़े ही समारोह के साथ संगृहीत है। कहीं-कहीं इनका आख्यान भिन्न-भिन्न रूपसे भी वर्णित हुआ है और इन्हें अत्यंत दीर्घजीवी के रूप में गुम्फित किया गया है। सप्तर्षियों में आपका परिगणन है। देवी अरुन्धती आपकी धर्मपत्नी है। ये पतिव्रताओं की आदर्श है। इनका महर्षि वसिष्ठसे कभी अलगाव नहीं होता। सप्तर्षि मण्डल में महर्षि वसिष्ठ के साथ माता अरुन्धती भी विराजमान रहती हैं। अखण्ड सौभाग्य और उच्चतम श्रेष्ठ दाम्पत्य के लिये महर्षि वसिष्ठ एवं अरुन्धती की आराधना की जाती है।

इनके आविर्भाव की अनेक कथाएं हैं। कहीं ये ब्रह्माजी के मानस-पुत्र, कहीं मित्रवरुण के पुत्र, कहीं आग्नेयपुत्र और कहीं प्राणतत्त्व से उद्भूत कहे गये हैं। ब्रह्मशक्ति के मूर्तिमान्-स्वरूप तथा तपःशक्ति के विग्रह महर्षि वसिष्ठजी के अतिदीर्घकालीन साधनाओं के प्रतिफल में अनेकानेक प्रकारसे आविर्भूत होना अस्वाभाविक नहीं, अपितु सहज ही प्रतीत होता है।

जब इनके पिता ब्रह्माजीने इन्हें सृष्टि करने की और भूमण्डल में आकर सूर्यवंशी राजाओं का पौरोहित्य करने की आज्ञा दी, तब इन्होंने उस कार्य में हिचकिचाहट प्रकट की। फिर ब्रह्माजी ने समझाया कि इसी वंश में आगे चलकर पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का पूर्णावतार होनेवाला है, तब महर्षि वसिष्ठ ने इस कार्य को सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके बाद इन्होंने सर्वदा अपने को सर्वभूतहित में लगाये रखा। जब कभी अनावृष्टि हुई, दुर्भिक्ष पड़ा, तब इन्होंने अपने तपोबलसे वर्षा करायी और जीवों की अकालमृत्युसे रक्षा की। इक्ष्वाकु, निमि आदि चक्रवर्ती सम्राटोंसे अनेक यज्ञ करवाये। जब अपने पूर्वजों के असफल हो जाने के कारण गङ्गाको लाने में राजा भगीरथ को निराशा हुई तब इन्हीं की कृपा से राजा भगीरथ पतितपावनी गङ्गा को पृथ्वी पर लाने में सफल हुए और तभीसे गङ्गा का नाम 'भागीरथी' पड़ गया। राजा दिलीप संतान न होनेसे दुःखी थे। इन्हीं के उपदेशसे नन्दिनी की सेवा के फलस्वरूप उन्हें महाराज रघु-जैसा प्रतापी पुत्र प्राप्त हुआ। राजा दशरथसे पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाकर इन्होंने भगवान श्रीराम को इस धराधामपर अवतीर्ण कराया और श्रीराम को अपने शिष्यरूप में प्राप्त कर इन्होंने अपना पुरोहित-जीवन सफल किया। भगवान् श्रीराम के भी ये गुरु रहे हैं, अतः इनकी विद्या बुद्धि, योग-ज्ञान, सर्वज्ञता तथा आचारनिष्ठता की कोई सीमा नहीं है। इन्होंने भगवान् श्रीराम को जो उपदेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया, वह ग्रंथ के रूप में 'योगवासिष्ठ' के नामसे प्रसिद्ध हो गया। महर्षि वेदव्यास एवं महाज्ञानी शुकदेव आचार्य वसिष्ठजी की पुत्र-प्रपौत्र-परम्परा में समादृत हैं।

महर्षि विश्वामित्र का क्षात्रबल इनके ब्रह्मतेज के सामने प्रभावहीन हो गया। इनमें क्रोध लेशमात्र भी नहीं है, क्षमा तो इनके जीवन में सब प्रकारसे अनुस्यूत है। जिस समय विश्वामित्रने इनके सौ पुत्रों का संहार कर दिया, उस समय भी वे अविचल ही बने रहे, सामर्थ्य रहनेपर भी उन्होंने विश्वामित्र के किसी प्रकार के अनिष्ट का चिन्तन नहीं किया, प्रत्युत क्षमा-धर्म का ही परिपालन किया।

एक बार बात-ही बात में विश्वामित्रजीसे इनका विवाद छिड़ गया कि तपस्या बड़ी है या सत्संग। वसिष्ठजी का कहना था कि सत्संग बड़ा है और विश्वामित्रजी का आग्रह था कि तपस्या बड़ी है। इस विवाद का निर्णय कराने के लिये अन्त में दोनों शेषभगवान के पास पहुंचे। सब बातें सुनकर शेषभगवान ने कहा, 'भाई, अभी तो मेरे सिर पर पृथ्वी का भार है। आप दोनों में से कोई एक थोड़ी देर के लिये इसे ले ले तो मैं निर्णय कर सकता हूं।' विश्वामित्र अपनी तपस्या के घमंड में फूले हुए थे, उन्होंने दस हजार वर्ष की तपस्या के फल का संकल्प किया और पृथ्वी को अपने सिरपर धारण करने की चेष्टा की। पृथ्वी कांपने लगी, सारे संसार में तहलका मच गया। तब वसिष्ठजी ने अपने सत्संग के आधे क्षण के फल का संकल्प कर के पृथ्वी को धारण कर लिया और बहुत देर तक धारण किये रहे। अन्त में जब शेषभगवान फिर पृथ्वी को लेने लगे, तब विश्वामित्र बोले-'अभी आपने निर्णय सुनाया ही नहीं।' शेषभगवान हंस पड़े। उन्होंने कहा- 'निर्णय तो अपने-आप हो गया। आधे क्षण के सत्संग की बराबरी हजारों वर्ष की तपस्या नहीं कर सकी।' इस प्रकार महर्षि वसिष्ठजी का माहात्म्य सब प्रकारसे निखर उठनेपर भी उनमें लेशमात्र अभिमान प्रविष्ट नहीं हो पाया था।

महर्षि वसिष्ठ सबके हितचिन्तक एवं कल्याण की कामना में लगे रहते हैं। इनका अपना कोई स्वार्थ नहीं, सदा परमार्थ-ही-परमार्थ। भगवद्भक्तों में आपकी गणना प्रथम पंक्ति में होती है। आपकी गोसेवा एवं गोभक्ति सभी गोभक्तों के लिये आदर्शभूत रही है। कामधेनु की पुत्री नन्दिनी नामक गौ आपके आश्रम में सदा प्रतिष्ठित रही। अरुन्धतीजी के साथ आप नित्य उसकी सेवा-सुश्रूषा किया करते थे और अनन्त शक्ति सम्पन्न कामधेनु नन्दिनी के प्रभाव से आपको दुर्लभ पदार्थ भी सदा सुलभ रहता था।

महर्षि वसिष्ठ सूर्यवंशी राजाओं के कुलपुरोहित रहे। महाराज निमिने एक यज्ञ में इन्हें वरण किया था, परंतु ये इसके पहले इन्द्र के यज्ञ में वृत हो चुके थे, इसीलिये राजा निमि को रूकने के लिए कहकर ये देवलोक चले गये। वहां यज्ञ सम्पन्न कराकर लौटे तो सुना कि अगस्त्य आदिसे निमिने यज्ञ करा डाला। इस पर क्रुद्ध होकर इन्होंने निमि को चेतनाशून्य हो जाने का शाप दे दिया। इस पर निमिने भी इन्हें ऐसा ही शाप दे डाला। अन्त में ब्रह्मा के उपदेशसे ये मित्रवरुण के पुत्र के रूप में पुनः उत्पन्न हुए और महाराज इक्ष्वाकुने अपने वंश के हितार्थ इन्हें पुनः कुलपुरोहित बनाया। गोत्रकार ऋषियों में महर्षि वसिष्ठ का जीवन-दर्शन तथा उनका कृतित्व सभी के लिये मङ्गलकारी है।

□ ■ □

लोगों की ओर देखने के बजाय हम अपने ही चित्त की ओर देखें। जिस समय हमें ऐसा लगता है कि मेरे चित्त का सन्तुलन बिगड़ा जा रहा है, हमें अपने मस्तिष्क का पुनर्योजन करना चाहिए। मस्तिष्क की विचारधारा को बदल देना चाहिए। यदि इस कला को हम सीख जायेंगे तो अपने आप हम 'योगी' हो जायेंगे।

– आचार्य किशोर व्यास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महर्षि वेदव्यास की अर्थनीति

– पं. महेश व्यास

भगवान वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत में मानव मात्र के लिए अर्थ के व्यय की जिस व्यवस्था का निर्देश किया है और जिसे आधार बनाकर आज तक हम अपने जीवन चक्र को चलाते रहे हैं, यदि उसे हम आज पुनः अपना लें तो हम न केवल साम्यवाद, समाजवाद आदि पाश्चात्य वादों के दूषित प्रभाव से अपने देश और अपनी संस्कृति को बचा सकेंगे किंतु दूसरे देशों के सामने एक नया आदर्श भी रख सकेंगे। यह व्यवस्था एक प्रकार से मार्क्सवाद या कम्यूनिज्म को खुली चुनौती है जो बिना रक्तपात के भी किसी राष्ट्र से अर्थ वैषम्य को दूर कर सकती है। शास्त्र वर्णित भूमिदान के माहात्म्य को सुना-सुना कर श्री विनोबा भावे ने जनता से लाखों एकड़ भूमि प्राप्त करके और उसे भूमिहीनों में बांट कर बिना रक्त की एक बूंद बहाए भूमि वैषम्य की समस्या को हल करने की बात कही परन्तु वे सफल न हुए क्योंकि लोगों ने प्रायः बंजर जमीनें दी, और वितरकों ने वह भी अपने संबंधियों को दे डालीं। दम्भी दाता झूठा यश चाहते थे, वितरक स्वार्थी थे। यदि भगवान व्यास के पूर्वोक्त संदेश को लेकर सच्चा प्रचार हो तो अर्थ वैषम्य की समस्या का समाधान हो सकता है।

वेदव्यासजी श्रीमद्भागवत में लिखते हैं

धर्माय यशसे अर्थाय कामाय स्वजनाय च।
पंचधा विभजन् वित्तम्-इह-अमुत्र च मोदते॥

मनुष्य को चाहिये कि अपनी आयसे राजांश (आयकर आदि) निकालने के बाद शेष को पांच हिस्सों में विभक्त कर लें। एक भाग यज्ञ स्नान दानादि धार्मिक कार्यों में व्यय करें, दूसरा यश के लिए, तीसरा धन कमाने के लिए पूंजी के रूप में, चौथा अपने सुख के लिए और पांचवां स्वजन, नौकर-चाकर कर्मचारी आदि में वितरण इस प्रकार करने पर मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में सदा प्रसन्न रहता है।

अब देखिये, यदि ईमानदारी पूर्वक मनुष्य सबके यथोचित भाग सब तक पहुँचा देना अपना कर्तव्य निश्चित कर लें तो, न तो रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार और नकली बही खाते आदि रखने के छल करने की आवश्यकता और न मिल मालिक, मजदूर, जमीदार, किसान, पूंजीपति और गरीबों की आये दिन की कशमकश और झगड़े। न हड़तालें न तालाबन्दी। हिन्दू राष्ट्र के इतिहास में यही अर्थ विभाजन की प्रणाली दृष्टिगोचर होती है। उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय के छह भाग करके उसे पूर्व निर्दिष्ट कार्यों में व्यय करता था।

सबसे पहला भाग राजांश होता था। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी स्थिति का हो - धनी हो चाहे निर्धन, गृहस्थ हो चाहे विरक्त वनवासी, अपनी आय में से राजा का अंश अवश्य निकाल देता था। लोगों की धारणा थी कि 'राजांशस्तेज आदत्ते' अर्थात राजा का अंश खाने से तेज नष्ट हो जाता है। इसलिए कोई भी ज्ञानी व्यक्ति राजांश को घर में नहीं रखता था। साधारण जनता की तो बात छोड़िये। वनों में रहनेवाले ऋषिमुनि भी-जो कि शिलोञ्छ वृत्ति से अपना जीवन निर्वाह करते थे, अन्न के जो दाने खेतों से बीन बान कर लाते थे, उनमें से नियम पूर्वक छठा हिस्सा निकालकर समीपस्थ तीर्थों के किनारे रख देते थे। हिन्दू राष्ट्र का इतिहास सर्वदा गौरवमय रहा है और उसका भविष्य भी समुज्ज्वल है। वेदव्यासजी की अर्थनीति अगर हम अपने जीवन मे अपनायें तो इस राष्ट्र को परम वैभव तक ले जा सकेंगे।

□ ■ □

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्यश्री द्वारा प्राणप्रतिष्ठा समारोह।

परंडा (जिला उस्मानाबाद) दिनांक ३१.८.२००४ से दिनांक सितंबर, २००४ तक परंडा में यह उत्सव मनाया गया। दिनांक ३१.८.२००४ को सायंकाल में सुंदरकांड (मराठी मानस) का सामुदायिक पारायण संपन्न हुआ। दिनांक १ सितंबर को परंडा गांव में श्रीविग्रहों की शोभायात्रा बड़े धूमधाम से निकाली गयी। दिनांक २ सितंबर प्रात: ६ बजेसे प्राणप्रतिष्ठा उत्सव के निमित्त वैदिक संस्कारों का आरंभ हुआ। बेलगांव के माननीय वेदमूर्ति श्री नागेश गोविंद हेर्लेकर शास्त्रीजी मुख्य पुरोहित के रूप में सब कार्यभार संभालते थे। आदरणीय श्री नीळकंठ पटवर्धनजी और सौ. रेखा पटवर्धन को मुख्य यजमान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दिनांक २ सितंबर को सायंकाल में श्री हनुमान यज्ञ का आयोजन किया गया था।

दिनांक ३ सितंबर को प्रात: ८ बजेसे ११ तक वैदिक संस्कार तथा पूर्णाहुति आदि होकर श्री शिवजी का 'रामेश्वर' ऐसा नामाभिधान किया गया। उसी समय प. पू. आचार्य स्वामी श्री किशोरजी व्यास का श्री हंसराज स्वामी के मठ में आगमन हुआ। स्वागत स्वीकार कर आपने श्री. पू. हंसराज स्वामी, श्री अनंतदास महाराज और प. पू. स्वामी प्रज्ञानानंद सरस्वतीजी की समाधि के दर्शन कर पुष्पमालाएं समर्पित कीं। बाद में पूज्य आचार्य जी श्रीराम विश्राम धाम की ओर चल पड़े।

वहां सुवासिनी द्वारा आपका औक्षण करके श्रीरामचरित मानस प्रेमी मंडल के उपाध्यक्ष डॉ. वि. ना. जोशीजी ने

पुष्पमाला अर्पित करके आपका स्वागत किया और पू. आचार्यजी सीधे श्री शिवजी की प्राणप्रतिष्ठा के लिये शिवलिंग की ओर चल पड़े। यथाशास्त्र वेदविधिपूर्वक मंत्रोच्चारपूर्वक पूज्य आचार्य स्वामी द्वारा रामेश्वर भगवान की प्राणप्रतिष्ठा उपरान्त श्री बालकृष्ण-माखनचोर के श्रीविग्रह की भी प्राणप्रतिष्ठा हुई और श्रीराम मंदिर में विधिवत् प्रवेश करके आपने श्री भरतजी तथा श्री शत्रुघ्नजी के श्रीविग्रहों की भी प्राणप्रतिष्ठा संपन्न की।

वहां पर परमपूज्य आचार्य स्वामी श्री किशोरजी व्यास को राखी बांधकर श्री कमलताई वैद्यने आपका औक्षण किया और नजर भी उतारी। उसके बाद पू. आचार्यजी व्यासपीठपर विराजमान हुए। वहां आपके शुभ करकमलों द्वारा 'मानस गूढार्थ चंद्रिका' अयोध्याकाण्ड खण्ड ४ और उत्तरकाण्ड खण्ड २ का विमोचन हुआ। प.पू. आचार्यजी के द्वारा ही इस प्रकाशन कार्य का श्री गणेश हुआ था और आपके ही शुभ हस्तों से इस प्रकाशन कार्य की पूर्ति हुई। यह देखकर श्रीरामचरितमानसप्रेमी मंडल के सब सदस्य भावविभोर हो गये। प. पू. आचार्यजी भी बहुत प्रसन्न हुए। सौ. रेखाजी पटवर्धन ने पहले प. पू. आचार्यजी का श्रोताओं को परिचय करा दिया और फिर पू. आचार्यजी का मार्गदर्शन संप्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि -

"आज यहां प.पू. स्वामी प्रज्ञानानंद सरस्वतीजी के स्मारक रूप में जो उपासना केंद्र निर्माण किया गया है उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखकर मैं बहुत-बहुत प्रसन्न हूं। स्वकर्तव्य करते हुए समाज का हित करने की पू. स्वामीजी की जीवनशैली थी उसका अनुसरण आपके शिष्य तथा अन्य लोग भी करें ऐसा संदेश मानो यह वास्तु दे रही है। प. पू. स्वामीजी के इस समृद्ध, उन्नत, भव्य स्मारक की वास्तु में मेरे ही द्वारा यह संकल्प सिद्ध हो रहा है यह मेरा परम भाग्य है ऐसा मैं मानता हूं।''

ज्ञानेश्वरजी की ज्ञानेश्वरी, तुकारामजी की गाथा, एकनाथजी का भागवत और समर्थ रामदासजी का दासबोध इस ज्ञानामृत परंपरा में 'श्रीरामचरितमानस' ग्रंथ ने स्थान प्राप्त कर लिया है। इस ग्रंथ का केवल पारायण पू. स्वामीजी को अभिप्रेत नहीं। पारायण अर्थ-रसग्राही होना आवश्यक है, क्योंकि इस ग्रंथ में वेदों में से अद्वैत और भक्ति की एकरूपता दृष्टिगोचर होती है।

आज Information Technology द्वारा Global Village का युग हम देख रहे हैं। सांप्रत संपूर्ण जगत मानो एक कमरे में आ गया है, लेकिन एकही कमरे में रहनेवाले लोग एक दूसरे से दूर-दूर जा रहे हैं। एक दूसरे से बनती ही नहीं। भाई का भाई से, पुत्र का माता-पिता से, बहू का सास से साथ निभती ही नहीं। मनुष्य-मनुष्य के बीच में दूरी बढ़ती जा रही है। मन का पोषण पैसे से नहीं प्रेम से होता है यह 'रामचरितमानस' सिखाती है।

इस प्रवचन के बाद सब देवताओं की आरती हुई। मंत्रपुष्पांजलि बाद प्रसाद वितरण हुआ।

□ ■ □

□ एक दिन का महत्व समझना हो तो उससे पूछो जो रोज मेहनत कर अपना पेट पालता हो व एक दिन उसे कार्य नही मिला।

□ एक सेकण्ड का महत्व अगर आपको समझना हो तो उससे पूछो जो दुर्घटना से बाल-बाल बच गया।

गीता परिवार, पुणे (दही हंडी)

गीता परिवार, पुणे द्वारा आयोजित दही हंडी अर्थात श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में मनाया जानेवाला प्रसिद्ध उत्सव दि. १४.०९.०४ मंगलवार को बड़े ही धूमधाम और प्रसन्न वातावरण में 'धर्मश्री' में मनाया गया। मां दुर्गावती बाल संस्कार केंद्र के बच्चों ने एक लघु नाटक 'क्यों केंद्र में जाना है' प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री केशव धावड़े ने बच्चों के सामने भिन्न-भिन्न पक्षियों की आवाजें सुनाईं। आचार्य श्री ने उनका अभिनन्दन किया और बच्चों को उपदेश देते हुए कहा, 'मनुष्य को पशु-पक्षियों की आवाज निकालना बहुत ही कठिन है लेकिन ये असम्भव कार्य भी अभ्यास के द्वारा संभव हो सकता है, उसी प्रकार हम स्वामी विवेकानंद, वीर सावरकर, सुभाषचंद्र बोस इन महापुरुषों की आवाजें निकालने का प्रयत्न करें, उनको अपने आदर्शस्थान में रखें और अखंड भारत का स्वप्न साकार करें।'

इस कार्यक्रम में पुणे विश्व-विद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. योगेन्द्रजी मिश्र उपस्थित रहे । कार्यक्रम का सूत्र संचालन कुं. सुमिता राजपूत ने प्रार्थना, ध्यान, मंगल स्मरण से किया। इस कार्यक्रम में चिन्तामणि बाल संस्कार केन्द्र, श्री दत्तगुरु बालसंस्कार केन्द्र के बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

□ ■ □

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी यहां निवास करती हैं।

एक बार देवर्षि नारदजी तथा देवराज इन्द्र मृत्युलोक में पधारे और गंगास्नान किया। एकाग्र मन से गायत्री जप का कार्य पूर्ण करके परस्पर वार्तालाप कर ही रहे थे कि, एकाएक उन्हें आकाश में एक दिव्य ज्योति दिखायी दी, जो प्रज्ज्वलित अग्निशिखा-सी प्रकाशित हो रही थी। वह ज्योति क्रमशः उन दोनों के समीप आती दिखाई दी। वह प्रभापुञ्ज भगवान विष्णु का विमान था। उसमें से एक अद्भुत सुन्दर नारी उतरी। वह अत्यंत तेजस्विनी थी और उसक कन्ठदेश में नक्षत्रों के समान दैदीप्यमान रत्नहार शोभा दे रहा था। दोनों ने हाथ जोड़ कर उसे प्रणाम किया। देवराज इन्द्र बोले, 'तुम कौन हो, कहां से आयी और कहां जा रही हो ?'

नारी ने उत्तर दिया -

मैं वही हूं जिसे समस्त प्राणी प्राप्त करना चाहते हैं। मैं लक्ष्मी हूं। मुझे ही पद्मा, भूति, श्रद्धा, मेधा, सिद्धि, नियति, समृद्धि कहते है। मैं विजयी सेनाओं के अग्रभाग में फहरानेवाले ध्वजाओं में और धर्मात्मा श्रेष्ठ पुरुषों के निवासस्थानों में निवास करती हूं। मैं सत्य और धर्म से बंधकर पहले असुरों के यहां रहती थी। मेरी कृपा से वे मनमाना दान कर मनोवांछित फल प्राप्त करते थे। दैत्य-दान, अध्ययन और यज्ञ करते थे। देवता, गुरु, पिता और अतिथियों की पूजा करते थे। उनके यहां सत्य का भी पालन होता था। वे न दिन में सोते थे, न रात को खाते थे। वे दयालु थे। मित्रों से कभी द्रोह नहीं करते थे। अविवेक, अप्रीति, आलस्य, कामना आदि दोष उनमें नहीं थे। इन्हीं उत्तम गुणों के कारण से सृष्टि काल से आजतक मैं उनके पास रही, किन्तु समय के उलट फेर से उनके गुणों में विपरीतता आ गयी। दैत्य अधर्मी बन गये। वे काम, क्रोध के वशीभूत हो गये। वे बड़े-बूढ़ों की अवमानना करने लगे। देर रात में जोर-जोर से हल्ला मचाते और सूर्योदय होने पर भी सोते रहते। पुत्रगण का पिताओं पर और पत्नियों का पतियों पर अत्याचार बढ़ गया। वृद्धजन, गुरुजन, आचार्य और अतिथियों का अभिनन्दन घट गया। तो मैंने दैत्यों का आश्रय छोड़ दिया।

इन्द्र ने पूछा-'आप किन गुणों के कारण लोगों के पास रहती है।'

लक्ष्मी ने कहा,

जो धर्म और सत्य का आश्रय लेकर ईश्वर की पूजा करते हैं।

जो वृद्धों को आदर और माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

जो अतिथियों के आने पर प्रसन्न होते हैं और उनका यथोचित सत्कार करते हैं।

जो ब्राह्म मुहूर्त में ही उठ जाते हैं और अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करते हैं।

जो पति-पत्नियां परस्पर विश्वास करते हैं और परस्पर प्यार से रहते हैं।

जो अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण नहीं करते और केवल अपने लिए भोजन नहीं पकाते।

जो संयम, नियम और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

जो परिश्रम से कर्तव्यपालनपूर्वक धन कमाते हैं।

जो दम्भहीन होकर जीवन यापन करते हैं।

जो निद्रा, तन्द्रा (आलस्य) में डूबे नहीं रहते है।

जो बिना कमाये धन जुटाना नहीं चाहते।

जो कृतघ्न होकन मित्रों से विश्वासघात नहीं करते।

जो करों की चोरी नहीं करते और राजद्रोह नहीं करते।

इन्द्र ने फिर पूछा, 'देवी ! आप अब कहां जा रही है ? अब आप किन के पास, कहां जाकर रहेंगी ?

लक्ष्मी ने उत्तर दिया -

मैं अब एक जगह स्थिर नहीं रहूंगी। बस, अब मैं वहीं जाकर रहूंगी, जहां धर्माश्रित बातों का पालन होगा। जहां मैं रहूंगी वहां आठों देवियां भी मेरे साथ निवास करेंगी। वे इस प्रकार है - आशा, श्रद्धा, धृति, शान्ति, विजिति, संनति, क्षमा और आठवीं वृत्ति। इनके रहने से सब प्रकार का विकास होगा।

□ ■ □

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिव प्रतिष्ठा महोत्सव

– अशोक भैय्या 'पारीक'

सम्पूर्ण वसुधा को पुण्यवती बनाने के लिए व्यास कुल को पवित्र करने के लिए तथा अपनी जननी को कृतार्थ करने के लिए राजस्थान की पुण्यभूमि किशनगढ़ तहसील के छोटेसे सरगांव नामक ग्राम में प्रातःस्मरणीय परम पूजनीय तपस्वी महादेव बाबा अवतरित हुए। आपने अपने ही ग्राम में करीब १५० वर्ष पहले भगवान शंकर का मंदिर निर्मित किया तथा वहां शिव परिवार की स्थापना की। धीरे-धीरे यह मंदिर बहुत प्रसिद्ध हो गया, बड़ी दूर-दूरसे यात्री यहां भगवान शंकर का अभिषेक करने के लिए आने लगे। लेकिन दुर्भाग्यवश कालप्रवाह के कारण ये मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो गया। अब तो यहां विराजित मूर्तियों को पहचानने में ही कठिनाई होने लगी। किन्तु फिर भी हर श्रावण में यात्रियों की अपार श्रद्धा के कारण अभिषेक व दर्शन होता रहता था।

इसी व्यास कुल में पुनश्च, प्रातःस्मरणीय महादेव बाबा ही सम्पूर्ण विश्व को अलङ्कृत करने पधारे। मुझे लगता है कि आपने गीता के इस महावाक्य **'शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते'** को सिद्ध करने ही पधारे हैं। उस अवतार में भी आपने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए कठिन तपस्या कीं। और उसी तपस्या का फल इस जन्म में हम सब पा रहे है। आप बड़े आतुर हो रहे होंगे, महादेव बाबा के दूसरे जन्म का नाम सुनने के लिए। आपका नाम प. पू. आचार्य स्वामी श्री किशोरजी व्यास। जिनकी चर्चा जिस प्रकार कुछ गृहस्थी आपस में मिलकर गृहस्थियों की चर्चा करते है, उसी प्रकार आज के सभी सन्त प. पू. गुरुवर की चर्चा किया करते हैं।

पिछले वर्ष गुरुदेव का अपने पैतृक ग्राम सरगांव जाना हुआ और वहां जब उन्होंने ये जीर्ण-शीर्ण हुआ मंदिर देखा। आंखों से

अश्रुधारा बही और वहीं यह प्रण लिया कि एक साल के भीतर इस मंदिर का जीर्णोद्धार मुझे करना है। पू. गुरुदेव के इस प्रण को पूर्ण करने में माननीय प्रेमसागरजी, घीसाराम शर्मा, छीतर महाराज (सरपंच) तथा श्यामसुंदर शर्मा ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। धीरे-धीरे समय पूर्ण हुआ और एक वर्ष के भीतर ही इस जीर्ण-शीर्ण मंदिर का जीर्णोद्धार पूर्ण हुआ। और आज वह दिन नजदीक आया, २५ अगस्त की सरगांव तथा वहां आस-पास के सभी ग्रामवासी चातक पक्षी की तरह प्रतीक्षा कर रहे थे।

पुनश्च मंदिर में नई प्रतिमा लाई गई और शिव परिवार के साथ-साथ ऋद्धि-सिद्धि सहित भगवान गणेश की मूर्ति तथा महादेव बाबा की प्राचीन चरण पादुकाओं को पुनश्च विराजित किया गया। यह शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव दि. २४ अगस्त सायम् से शुरू हुआ। इस महोत्सव के प्रमुख यजमान पू. गुरुदेव के ज्येष्ठ भ्राता श्री हरिप्रसादजी रहे तथा प्रमुख आचार्य श्री रेणुकादासजी एवं देवीलालजी शास्त्री के आचार्यत्व में १५ ब्राह्मणों के द्वारा प्रथमदिन दिनांक २४ को प्रायश्चित दशविध स्नान, हवन। दूसरे दिन दि. २५ को पुण्याहवाचन जल यात्रा जो कि सम्पूर्ण ग्राम की परिक्रमा कर मंदिर तक पहुंची। जलाधिवास,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धान्याधिवास दि. २६ को तृतीय दिन मूर्तिकलश स्थापन, पुष्पाधिवास, आलयसंप्रोक्षण, शय्याधिवास तथा दि. २७ अगस्त को पू. गुरुदेव, प्रमुख यजमान तथा ग्राम के सरपंच छीतर महाराज के हाथों से मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा, षोडश संस्कारों के द्वारा मूर्तियों को संस्कारित किया गया। तथा २५ कावड़ियों के द्वारा पुष्करराज के सरोवर से लाये हुए जल के द्वारा उन्हीं कावड़ियों के हाथों से रुद्राभिषेक किया गया तथा पुष्पार्चना भी की गई।

त्रिदिवसीय उत्सव तन को पुलकित और मन को प्रफुल्लित करनेवाला था। क्योंकि एक तरफ वृन्दावन से पधारे प. राकेश शास्त्रीजी के द्वारा श्री कृष्णलीलामृत का गान व दूसरी तरफ वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा वेद का घोष एवं पू. गुरुदेव के हाथों से शिव परिवार की स्थापना ये सब दृश्य किसी भाग्यशाली को ही देखने को मिलते हैं। कार्यक्रम की पूर्णाहुति के पश्चात् भण्डारा हुआ। जिसमें हजारों भाविक भक्तों ने महाप्रसाद पाया।

इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए निम्बार्क पीठाधीश्वर जगद्गुरु पू. श्री जी महाराज पधारे। पू. गुरुदेव के करकमलों द्वारा पू. महाराजजी का पूजन हुआ तथा महाराज श्री ने अपने अमृत वचनों के द्वारा सभी को कृतार्थ किया और गुरुदेव के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए इस मंदिर का नाम 'व्यासेश्वर महादेव मंदिर' रखने को कहा।

इसके पश्चात् जिनके सहयोग से यह मंदिर निर्माण हुआ, माननीय प्रेमसागरजी, घीसारामजी, श्यामसुन्दर शर्मा, छीतर महाराज एवं जिनके कारण से यह कार्यक्रम सम्पन्न हो सका तथा सभी कावड़ियों का पू. गुरुदेव ने अपने कर सरोरुहों द्वारा सादर सत्कार किया।

जब पू. गुरुदेव एवं व्यास परिवार पुना के लिए पुनः लौट रहे थे। सभी ग्रामवासियों के आंखों से प्रेमाश्रु झलक रहे थे। वास्तव में ये दिन अविस्मरणीय रहेंगे। □■□

एक मिनट का महत्व समझना हो तो उससे पूछो जिसकी रेलगाडी छूट गई।

पू. आचार्य स्वामी श्री किशोर व्यास
आगामी कार्यक्रम
(ईस सन अक्तूबर २००४ से मई २००५ तक)

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
२८-१० से ०३-११-०४	मुंबई (जोगेश्वरी)	भागवत कथा
०५-११ से ०७-११-०४	मुंबई (मालाड)	गीता प्रवचन
१६-११ से २२-११-०४	जालना (महा.)	भागवत कथा
२४-११ से २५-११-०४	सलेमाबाद (राजस्थान)	धर्म संमेलन
२७-११ से ०३-१२	अहमदपुर (महा.)	भागवत कथा
०५-१२ से ११-१२	जयपुर (राजस्थान)	भागवत कथा
१८-१२ से २२-१२	गोरखपुर (उ.प्र.)	गीता प्रवचन
२३-१२ से ३१-१२	लखनऊ (उ.प्र.)	भागवत कथा
०१-०१ से ०२-०१-०५	कोलकाता	संस्कृति संसद
०७-०१ से ११-०१-०५	सूरत (गुजरात)	प्रवचन-सत्संग
१३-०१ से १५-०१	अमरावती (महा.)	सत्संग प्रवचन
१८-०१ से २६-०१	अहमदाबाद (गुज.)	महाभारत कथा
२८-०१ से ०५-०२	रायपुर (छत्तीसगढ़)	भागवत प्रवचन
०९-०२ से १४-०२	पुणे	श्री गणेश प्रतिष्ठा
१५-०२ से २१-०२	कोटा (राज.)	भागवत कथा
२५-०२ से ०३-०३	रामेश्वरम्(तामि.)	भागवत कथा
०५-०३ से ०७-०३	आलंदी (पुणे)	वार्षिकोत्सव
११-०३ से १७-०३	वांबोरी (महा.)	भागवत कथा
१८-०३ से २०-०३	औरंगावाद (महा.)	व्याख्यान माला
२२-०३ से ३०-०३	दिल्ली (आदर्शनगर)	भागवत कथा
०१-०४ से ०३-०४	चंडीगढ़ (पंजाब)	प्रवचन-सत्संग
०४-०४ से १०-०४	चंडीगढ़ (पंजाब)	भागवत कथा
१३-०४ से १९-०४	पूर्णा (महा.)	भागवत कथा
२३-०४ से ०१-०५	पुणे, सहकारनगर	श्रीराम कथा
०६-०५ से १३-०५	स्वर्गाश्रम (उत्तरांचल)	साधना शिविर
१५-०५ से २३-०५	स्वर्गाश्रम (उत्तरांचल)	भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क - 'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६.
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९, फॅक्स (०२०) २५६७२०६९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

|| श्री ज्ञानेशो विजयतेतराम् ||

श्री भगवान्निम्बार्काचार्य लोकपावन परम्परागत
अखिल भारतीय श्री निम्बार्क पीठाधीश्वर जगद्‌गुरू

पूज्य श्रीराधा सर्वेश्वर शरणदेवाचार्य
श्रीश्रीजी महाराज

चरण सरो रूहयोः समर्पितः
अभिनन्दन - पद्य प्रसूनाञ्जलिः।

भारतवर्षे पश्चिमाञ्जले महाराष्ट्रभूर्विशिष्यते
मुंगी पैठण तीर्थं यस्यां गोदातीरे विराजते।
तत्र जनिं लब्ध्वा सा ज्योतिः साक्षाद्यास्मिन् प्रकाशते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥१॥

एकं ज्योतिरभूत् द्वेधा तद् यथा हि राधा-माधवयो
द्वैतच्छलमद्वैतच्छलमपि जीवेश्वरयोर्नात्यमहो।
रूचिरदर्शनं निम्बार्कणां नित्यं येन प्रगीयते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥२॥

आर्यसनातन धर्म-वेद-गो-ब्राह्मणरक्षां यः कुरूते
भारतमाता-संस्कृत भाषा निष्ठावृद्धिं संतनुते।
प्रिय युगलांघ्रि सरोजरसं भक्तेभ्यो नित्यं स्वादयते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥३॥

स्थाने स्थाने प्रबोधनार्थ नित्यं भ्रमणं कृतवन्तं
तीर्थे तीर्थे दिव्य देश जीर्णोध्दारार्थं प्रयतन्तं।
काले काले परिषत् सम्मेलनादिभिर्जागरयन्तं
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥४॥

चंद्र ज्योत्स्ना शीतल तायाः सुखदनुभूतिं यच्छन्तं
अभिनन्दामः स्निग्धस्मितविलसित नयनाभ्यां पश्यन्तं।
करूणावरूणालयमति मधुरं ज्ञानामृत मभिवर्षन्तं
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥५॥

आचार्यचरणाम्भोजे प्रह्वप्रणतिपूर्विका।
श्रध्दासुमन संयुक्ता किशोरकृतिरर्पिता॥

आश्विन शु. ११
संवत् २०६१
दि. २४।१०।२००४

विनयावनतः
आचार्य किशोर व्यासः
(पुण्यपत्तनम्)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Friday July 9, 2004 email: info@weeklytimesofindia.com Volume 2, Issue 28,

Tete-a-tete with Acharya Swami Kishoreji Vyas

An ardent devotee of Sant Gyaneshwar, sedate, pleasant, endearing, is Acharya Swami Kishoreji Vyas. A radiant countenance, a benign smile and a friendly disposition lends to his persona a magnetic pull. There is nothing intimidating or formidable about him. His affable demeanour could melt even the cruellest of hearts.

Honestly speaking I was a bit hesitant to meet him. For the impression that I bore in mind of men of such stature was quite the contrary . But on meeting him I realized how wrong I was. As we got talking I barely realized that how time flew by!

Born in 1949 into a devout family of preachers, it was but natural for Acharya Vyas to take to this path. Experiencing a strong pull to this calling Acharya Vyas went on to graduate in comparative philosophy from the Tattvajnan Vidyapeeth under the guidance of His Holiness Pandurang - Shastri Athavale of the Swadhyaya Pariwar. Not quite satisfied with the knowledge that he gained, Acharya Vyas went to Varanasi where he studied in detail the voluminous texts of ancient Indian scriptures (Vedas, Upanishads..et al) - hence completing his Acharya degree.

Besotted by the wealth of knowledge contained in the ancient Indian texts, Acharya Vyas took it upon him to dissipate that knowledge to the people. By doing so he wishes to illuminate the dark recesses of our minds with the light of love, hence cleanse us of all negative thoughts and feelings. Expounding the crux of Indian thought Acharya Vyas said that it showed us the way to live life to the fullest, by achieving a balance in everything we do. Quoting a few lines from the scriptures and later explaining them he said that excess work on one hand and not working at all, gorging on food on one hand and starving on the other, sleeping too much or not sleeping at all robs you of your peace of mind, leaving you restless and stressed. Reiterating and pointing out the fact that the pearls of wisdom enshrined in our scriptures transcend all barriers of time and that they shall always retain their relevance. Acharya Vyas said they stress on self discipline and self restraint-values which in the present times are on the decline, but need to be rekindled once again.

As our conversation meandered through the different phases of history and its impact on religion, I could not help but ask him a question that since quite some time had been hanunting me and that was why (some) westerners hold the multilimbed idols of Indians deities in contempt. To that Acharya Vyas replied that, "God would not be God if He were not able to assume the multifarious forms that His devotees visualise Him in. Omnipotent as He is, He will take any form and bestow upon you His grace." Marvelling at his sagacity, I dared to ask him another question. And that was, that as per the televised versions of Ramayana and Mahabharata the deities are shown to have possessed extraordinary powers. Did they really possess those powers? A smiling Acharya Vyas replied "Those are metaphors that express the power of the deity." He said it all...

It is not without reason that Acharya Vyas has been awarded the Mahaswami National Eminence award.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीता परिवार, बीड़ : संस्कार वर्ग में आरोग्य संबंधी जानकारी...

गीता परिवार, बीड़ द्वारा सम्पन्न सप्त दिवसीय संस्कार वर्ग में बच्चों को गणपति स्तोत्र, राष्ट्रभक्ति के गीत, रामरक्षास्तोत्रम्, गीता १२ व १५ वों अध्याय कण्ठस्थ कराने के साथ-साथ आंख, दांत, आहार, स्वस्थ दिनचर्या इ. के सम्बन्ध में डॉक्टरों द्वारा विशेष जानकारी मनोरंजक रूप से दी गई। वर्ग में आयोजित सामान्य ज्ञान, महापुरुष वेश-भूषा इत्यादि स्पर्धाओं में बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। संस्कार वर्ग हेतु सौ. पुष्पा जैथलिया, श्री शामजी बाहेती, सौ. पार्वतीबाई चितलांगे, सौ. ज्योति देशमुख, श्री श्रीकिशन जैथलिया, सौ. हेमा बाहेती, सौ. तारा सिकची ने विशेष परिश्रम किया। इस वर्ग के पश्चात् सौ. ज्योति देशमुख व श्री देशमुख ने सहयोगनगर प्रभाग में एक नवीन वर्ग की स्थापना का निश्चय किया।

गीता परिवार, हैदराबाद द्वारा आयोजित संस्कार शिबिर में राष्ट्र स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक प.पू. श्री सुदर्शनजी के मार्गदर्शन का सौभाग्य बच्चों व कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ। छायाचित्र में प.पू. सुदर्शन जी के साथ पू. श्री देवीप्रसाद स्वामीजी व गीता परिवार, हैदराबाद के प्रमुख श्री हरिनारायणजी व्यास परिलक्षित हैं।

गीता परिवार, लातूर द्वारा ग्यारह दिवसी संस्कार वर्ग सम्पन्न:

गीता परिवार, लातूर द्वारा आयोजित संस्कार वर्ग में १०० से भी अधिक बालकों ने भाग लिया। इस वर्ग में सहभागी बच्चों को नियमित रूप से योगासन, प्राणायाम, ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न मैदानी तथा मनोरंजक खेलों के आनंद के साथ ही गीता का १२वां अध्याय भी बच्चों ने कण्ठस्थ किया। अन्तिम दिन विविध संतों व महापुरुषों की वेशभूषा में एक 'संस्कार फेरी' निकाली गई तथा इस वर्ग की दैनन्दिन गतिविधियों की एक झलक तीन लघुनाटिकाओं के माध्यम से दी गई। संस्कार वर्ग हेतु सौ. यशोदा तापडिया, सौ. पुष्पा मालू, सौ. सुरेखा हेड़ा, सौ. मधु कलंत्री, सौ. धुत भाभी, सौ. अनुसूयाा राठी, कु. वनिता कडेल, कु. पूनम अग्रवाल, श्री ईश्वर मालू, श्री नरेन्द्र बिदादा, श्री नंदकिशोर बाहेती, श्री हरिनारायण कचोलिया, श्री लक्ष्मीकांत कर्वा, डॉ. जीवन चाकूरकर, श्री कमलेश भैय्या एवं जिला प्रमुख श्री जगदीश हेड़ा ने विशेष परिश्रम किया।

गीता परिवार बालभवन : बच्चों ने किया भूमिपूजन..

प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित जीवनमूल्य बच्चों तक पहुंचाने का कार्य संस्कार शिविर द्वारा गीता परिवार के माध्यम से होता है। बालभवन के रूप में इसी दिशा में गीता परिवार ने एक कदम और आगे बढाया है। ३ से १२ वर्ष के बच्चों के लिये प्रतिदिन यह उपक्रम चलता है। बालभवन न तो कोई विद्यालय है न ही इसका कोई बंधा हुआ अभ्यासक्रम है। नवनवीन प्रयोगों, उपक्रमों के माध्यम से बच्चों को स्वयं ही फलने-फूलने का अवसर बालभवन में प्राप्त होता है। गत तीन वर्षों से स्थानीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालपाणी में प्रायोगिक रूप से चल रहे बालभवन की सफलता व उपयोगिता को देखते हुए संगमनेर नगरपालिका ने बालभवन के कार्य को स्थाई रूप मिले इस दृष्टि से भूमि प्रदान की। अपने लिये बननेवाले इस बालभवन का भूमिपूजन भी बच्चों ने ही किया। पारम्परिक वेशभूषा में बालभवन के सभी १२० बच्चे आये। पूजन हेतु तैयार ११ हवनकुण्ड में हवन कर बच्चों ने नये बालभवन के निर्माण कार्य का श्रीगणेश किया। सामान्यतया बच्चे ही अपने माता-पिता को पूजा हवन जैसे कार्य करते हुए देखते हैं। किन्तु इस मौके पर स्वयं हवन करने और अपने माता-पिता को सामने बैठे देख बच्चों को उत्साह द्विगुणित था एवं यज्ञ-हवन जैसे कार्य में उन्हें आनंद भी आया।

नये बालभवन के निर्माण हेतु बच्चों ने दिये आतिशबाजी के लिये बचाये पैसे...

बालभवन के निर्माण कार्य में अधिकाधिक लोग सहभागी हों इस दृष्टि से प.पू. आचार्य श्री ने कथा के समय जब आर्थिक सहयोग का आवाहन किया तो सभी ने बड़े स्नेह व अपनत्व के भाव से उत्स्फूर्त प्रतिसाद दिया। कई बच्चों ने प्रतिदिन मिलने वाले हाथखर्च के पैसे जमाकर बालभवन के निर्माण कार्य हेतु दिये। एक छोटे बालक चि. अमर संदीपजी लाहोटी ने तो दीपावली पर आतिशबाजी के लिये गुल्लक में जमा पैसे प.पू. आचार्य श्री को बालभवन हेतु समर्पित करने की घोषणा की थी। प.पू. आचार्य श्री का शुभाशीर्वाद व अनेक लोगों के प्रेम व शुभेच्छा के फलस्वरूप बालभवन की जो इमारत खड़ी होगी वह सीमेंट-वालू से बनी एक साधारण इमारत मात्र न रहकर पूरे देश में चल रहे संस्कार कार्य व अन्य बालभवनों के लिये भी एक आदर्श प्रकल्प सिद्ध होगी।

गीता परिवार, सूरत द्वारा गीता प्रवचन महोत्सव का आयोजन...

प.पू. आचार्य श्री किशोरजी व्यास के श्रीमुख से 'मानव जीवन की सफलता का शास्त्र : गीता' इस विषय पर प्रवचन का आयोजन गीता परिवार, सूरत द्वारा किया गया। नगरवासियों ने प.पू. आचार्यश्री के मुखारविंद से गीता का माहात्म्य सुनने के इस स्वर्णिम अवसर का भरपूर लाभ उठाया। प्रवचन के पश्चात अनेक नये बन्धु-भगिनी गीता परिवार द्वारा संचातिल संस्कार कार्यों से जुड़े। गीता परिवार की मार्गदर्शिका सौ. बिमलादेवी साबू एवं सौ. माया मुंदडा, सौ. उमा साबू, सौ. रमा पेडिवाल, सौ. पुष्पा राठी, सौ. मधु राठी ने कार्यक्रम हेतु विशेष परिश्रम किया।

गीता परिवार, मराठवाडा द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न...

शीतकालीन अवकाश के दौरान प्रारंभ होनेवाले संस्कार वर्गों के आयोजन की दृष्टि से कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने हेतु गीता परिवार, मराठवाडा द्वारा एक दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन गीता भवन, ढालेगांव में किया गया। इस वर्ग में सम्पूर्ण मराठवाडा के १५० से भी अधिक कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण वर्ग में गीता परिवार मराठवाडा प्रमुख डॉ. राजकुमार लड्ढा व गीता परिवार के पूर्णकालीन प्रचारक श्री कमलेश भैय्या ने नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर प्रशिक्षण दिया। श्री कमलेश भैय्या का नौ दिवसीय रामायण पारायण भी ढालेगांव में सम्पन्न हुआ।

'दो शब्द मां के लिए - दो शब्द पिता के लिए'

गत तीन मास में गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी का 'दो शब्द मां के लिए, दो शब्द पिता के

'धर्मसंस्थापनार्याय संभवामि युगे युगे' आतंक के प्रतीक हिरण्यकश्यपू के नाश के लिये भगवान नृसिंह का प्राकट्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए' यह व्याख्यान औरंगाबाद, नेवासा, पुणे, बारामती, पैठण, राजगुरूनगर, शिरूर, चिंचवड, रहाता इत्यादि स्थानों पर आयोजित किया गये।

भागवत कथा ज्ञान बना 'संस्कार यज्ञ'...

'हमारे बच्चों में किस प्रकार के संस्कार होंगे यह इस पर निर्भर करता है कि घर में हम बच्चों के साथ किस प्रकार की चर्चा करते हैं। आज हम बच्चों से गप्पें मारते हैं तो विषय होता है फिल्मों का। क्या हम कभी बच्चों के साथ दान, सेवा या महापुरुषों की कथाओं के विषय में गप्पें मारते हैं ? बच्चे यदि कोई फिल्मी गीत गुनगुनाकर उसपर नृत्य करते हैं तो हम सोचते हैं कितना होशियार बच्चा है। क्या हम कभी बच्चों का हनुमानचालिसा की दो चौपाईयां सुनाने को कहते है ? किशोरावस्था में अपने बालक से क्या कभी हम यह प्रश्न करते हैं कि बेटा तुम्हारे अनुसार देशभक्ति का अर्थ क्या होता है, बताओ।' संगमनेर में दि. १९ से २६ सितंबर २००४ की अवधि में आयोजित श्रीमद् भाववत कथा ज्ञानयज्ञ के दौरान भक्त प्रल्हाद की कथा कहते हुए प.पू. आचार्य श्री किशोरजी व्यास के इन शब्दों ने प्रत्येक श्रोता के मन को झकझोर दिया। प.पू. आचार्यजी के स्वयं संकल्पित तथा गीता परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के निमित्त हुए विभिन्न उपक्रमों से इस कथा ने संस्कार यज्ञ का रूप ले लिया। प.पू. आचार्य श्री किशोरजी व्यास द्वारा संस्थापित बाल उत्थान एवं बाल संस्कार कार्य के प्रति समर्पित संस्था है। गीता परिवार एवं इस कथा के माध्यम से बाल संस्कार की दृष्टि से जो प्रयोग हुए वे अन्य स्थानों पर कथा के आयोजन में भी आदर्श एवं अनुकरणीय सिद्ध होंगे।

मन्त्र पताका लेखन...

कथा से पूर्व संगमनेर व आसपास के परिसर में ५००० घरों में ५००००० पताकाओं पर 'राम कृष्ण हरि' यह मन्त्र लिखा गया। एक पताका पर २५ बार इस प्रकार सवा करोड़ मन्त्र का पुरश्चरण लेखन के माध्यम से हुआ। कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर मन्त्र पताका वितरित किये एवं परिवार में दादा से लेकर पोते तक सभी इस पवित्र कार्य में सहभागी

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाना समाज में व्याप्त कुरीतियों को नष्ट करने का संदेश ही देता है...

हुए। इन रंगबिरंगी मन्त्र पताकाओं से कथा स्थल शोभायमान हुआ एवं मन्त्रों की छांव में कथा श्रवण करने का अनूठा अनुभव श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

श्रीमद् भागवत गीता के अध्यायों का सामूहिक पठन...

गीता परिवार के माध्यम से प्रति वर्ष हजारों बालक तथा युवक गीता के अध्याय कण्ठस्थ करते हैं। प्रतिदिन की कथा का शुभारंभ भी विविध केन्द्रों के बालक व महिला कार्यकर्ताओं ने गीता के एक-एक अध्याय को कण्ठस्थ कर उसके सामूहिक पठन से किया। कथा शुभारंभ संगमनेर के लगभग १००० बालकों द्वारा गीता का १२ वां अध्याय पठन कर किया गया। अंतिम दिन वनवासी केन्द्र के १५० बाल-बालिकाओं को आठवां अध्याय कण्ठस्थ कर उसका सामूहिक पठन करते देख स्वयं प.पू. आयार्य श्री ने भी मुक्त कण्ठ से उनकी प्रशंसा की। सौ. सुवर्णाकाकी मालपाणी के स्वर में गीता के विभिन्न अध्यायों की ध्वनिफीतियां अनुपठन पद्धति में तैयार की गई है, जिसके माध्यम से प्रतिवर्ष अनेक विद्यालयों में हजारों बच्चे गीता के अध्याय कण्ठस्थ करते हैं।

नाट्यदर्शन...

कथाश्रवण हेतु अधिकांशतः बड़े बुजुर्ग ही बड़ी संख्या में आते हैं। अतः युवकों तथा विशेषकर बालकों तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भागवत कथा का माहात्म्य पहुंचे इस दृष्टि से प्रतिदिन की कथा के पश्चात उस दिन की कथा के मुख्य अंश पर आधारित भागवत पुराण, बालभक्त ध्रुव, भक्तराज प्रहलाद, कृष्ण जन्म, विश्वरूप दर्शन, कालिया मर्दन, गोवर्धन धारण, एवं कंस-चाणूर मर्दनम् इन ८ नाटिकाओं का मंचन किया गया। लगभग २०० बाल तथा युवा कलाकारों के सहयोग से प्रस्तुत ये नाटक सम्पूर्ण शहर में बच्चे-बड़े सभी के बीच चर्चा का विषय बन गये। रंगमंच पर होलिका दहन, खम्भा टूटकर भगवान नृसिंह का प्राकट्य, अनेक मुखवाले विशालकाय कालिया नाग पर भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य, गोवर्धन पर्वत को उठाना तथा कृष्ण एवं कंस का द्वन्द्व युद्ध, रंगबिरंगी वेशभूषा, उत्कृष्ट संवाद तथा पार्श्वसंगीत एवं बाल कलाकारों के जीवन्त अभिनय से हजारों की संख्या में उपस्थित श्रोता रोमांचित हो उठे। ध्रुव-प्रलहाद की भक्ति, भगवान नृसिंह की शक्ति तथा श्रीकृष्ण की युक्ति का संदेश लिये ये नाटक शिश्चित रूप से बालकों के लिये उनके जीवन में प्रेरणादायी सिद्ध होंगे।

आरोग्य के लिये प्राणायाम साधना वर्ग अर्थात् SKY...

आधुनिक जीवन की भागदौड़, व्यवसायिक स्पर्धा, आहार व वातावरण में व्याप्त प्रदूषण, व्यायाम का अभाव एवं मन की चिन्ता के कारण अनेक रोगों का निर्माण होता है। शरीर में व्याप्त 'प्राण' को योग्य पोषण न होने तथा शरीर-प्राण-मन का संतुलन बिगड़ने से रोग निर्माण होते हैं। इसके लिये एक ही निवारण है - यौगिक प्राणायाम।

गीता परिवर के उपाध्यक्ष योगाचार्य श्री सुरेशजी जाधव द्वारा संशोधित तथा आरोग्य के साथ-साथ साधना की दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोगी प्राणायम की पद्धति - SKY अर्थात् 'सर्व कल्याण योग' इस प्राणायाम वर्ग का आयोजन कथा की अवधि में ही प्रतिदिन प्रातः ६.३० से ७.३० तक किया गया। लगभग ५०० लोगों ने इस प्राणायाम वर्ग का लाभ उठाया। संगमनेर के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी श्री जाधवजी के प्राणायाम वर्ग का लाभ अनेक महानुभावों ने उठाया।

पुस्तक प्रकाशन : 'दैनन्दिन जीवन में गीता'...

अखिल भारतीय गीता परिषद् के न्यासी मण्डल की सदस्या सौ. सुवर्णाकाकी मालपाणी गत १९ वर्षों से बालक-बालिकाओं व महिला कार्यकर्ताओं को गीता अध्याय पाठांतर कराने के माध्यम से गीता साधना का कार्य कर रहीं हैं। गत वर्ष गीता जयंती के अवसर पर अहमदनगर

अपनी शक्ति का दुरूपयोग करने वाले कालिया नाग का मानमर्दन भगवान श्रीकृष्ण ने उभरे फनों पर नृत्य करके किया।

आकाशवाणी द्वारा उनके 'दैनन्दिन जीवन में भागवत गीता' इस विषय पर व्याख्यान का प्रसारण किया गया, ४५ दिनों की यह शृंखला अत्यन्त लोकप्रिय हुई एवं भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के अवसर पर उनके व्याख्यानों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। दि. २१ नवबंर २००४ को प.पू. आचार्य श्री किशोरजी व्यास के कर-कमलों से इस पुस्तक का विमोचन, लोकार्पण किया गया।

एक सेकेण्ड के दसवें भाग का महत्व समझना हो तो उससे पूछो जो ओलम्पिक खेलों में गोल्ड मेडल न पा सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भागवत ज्ञान यज्ञ का अद्‌भुत चमत्कार !

१. मेरी बहन श्रीमती पद्‌मादेवी, फलोड़, अगरतला (त्रिपुरा) से आचार्य श्री के गोठ मांगलोद-सितंबर २००३ भागवत ज्ञानयज्ञ में आई। मेरी बहन के रक्त शर्करा (Blood Sugar) बहुत कम रहती, जिसके फलस्वरूप वह सुबह ४ बजे से १० बजे तक बेहोश रहती। ग्लुकोज पिलाते, तब होश आता। पूरे दिन में एक रोटी से ज्यादा नहीं खा सकती थी। नमक-मिर्च बिल्कुल बन्द था। बीस वर्ष से सूर्योदय के दर्शन भी नहीं किये।

श्रीमद्‌भागवत के छ्प्पन भोग का प्रसाद जिसमें नमक-मिर्च, चने, मिठाई आदि व्यञ्जन थे। उसी समय से उसने पूरा भोजन शुरू कर दिया। अब मेरी बहन स्वस्थ है।

२. श्री गोठ मांगलोद माताजी के २ किमी के क्षेत्र में गोवर्धन पूजन व छ्प्पन भोग के दिन बहुत ज्यादा वर्षात हुई। गर्मी कम हो गई व ठण्डा वातावरण हो गया। २ किमी. वृत्ताकार से आगे एक बूंद भी वर्षात नहीं हुई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महाराज श्री ने इन्द्र को विशेष निमंत्रण दिया हो।

वैद्य त्रिलोकचन्द्र मिश्र
निदेशक, जैन विश्व भारती,
लाडनूं (नागौर) राजस्थान

श्रीमती पद्‌मादेवी ने श्रीमद्‌भागवत में श्री गिरिराज महाराज के छ्प्पन भोग का प्रसाद (षट्‌रसयुक्त) बड़ी श्रद्धा-निष्ठा से पाया। श्री गिरिराज महाराज जी की कृपा एवं श्री महाराज जी के आशीर्वाद से उन्हें नया जीवन मिला। बीस वर्षों से छूटा भोजन एवं रूग्णता दूर होकर पूर्ण भोजन लेकर स्वस्थ हैं।

ज्ञातव्य है कि वैद्य जी आयुर्वेद के प्रख्यात चिकित्सक हैं, बहन की चिकित्सा करते-करते हार मान गए थे।

- संपादक

ऋषिकुमार आपके द्वार

वेदपाठी छात्रों के लिये माधुकरी भिक्षा योजना

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के माध्यम से वर्तमान में दस वेद विद्यालयों का संचालन हो रहा है, जिनमें लगभग ३०० छात्र प्राचीन गुरुकुल पद्धति के अनुसार विद्यालय में रहकर ही वेद अध्ययन करते हैं। अपनी ऋषिप्रणाली के अनुसार इन छात्रों का निवास, भोजन तथा अध्ययन आदि का व्यय प्रतिष्ठान ही करता है। इसमें से उनके भोजन के वार्षिक व्यय का अंशदान रु. ५,१००/- प्रदान करनेवाले दानदाताओं को ब्रह्मचारी बटु को आंशिक भिक्षा प्रदान करने का पुण्य प्राप्त होता है। आपसे अनुरोध है कि, इस ऋषिकुमार भिक्षा योजना में सहभागी होकर वैदिक संस्कृति की रक्षा के इस पवित्र कार्य में यथाशक्ति सहयोग स्वयं भी करें और औरों से भी करावें।

इस योजना में सहभागी होने के लिए 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के नाम नगद राशि अथवा पुणे शाखा चेक/डी.डी. पुणे कार्यालय भेजने की कृपा करें।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान
'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंटस्,
सूर्यमूखी दत्तमंदिर के पास,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६
दूरभाष - (०२०) २५६५२५८९
फॅक्स - २५६७२०६९

- एक वर्ष का महत्व समझना हो तो उस विद्यार्थी से पूछो जो एक बार अपनी कक्षा में फेल हो गया हो।
- जीवन में एक माह का महत्व समझना हो तो उस मां से पूछो जिसके एक महीने पहले बच्चा पैदा हो गया।
- एक सप्ताह का महत्व समझना हो तो उससे पूछो जो साप्ताहिक पत्रिका निकालता है एवं एक सप्ताह अखबार न निकाल सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैदिक कालमें सात्त्विक आहार

मनुष्यके जीवनमें भोजनका अत्यन्त विशिष्ट महत्त्व है। वह जिस प्रकारका भोजन करता है, उससे उसकी प्रकृति एवं आचार-विचारका ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण जीवनका स्वरूप आँका जा सकता है। मनुष्यद्वारा ग्रहण किया हुआ भोजन सूक्ष्म रूपसे मानव-शरीर एवं मस्तिष्कको प्रभावित करता है; जबकि इस ग्रहण किये हुए भोजनका स्थूल भाग मल आदिमें बदलकर बाहर प्रेषित हो जाता है।

भोजनमें सात्त्विक आकारके विषयमें वैदिक कालसे ही निर्देश दिया है, अर्थात् वैदिक कालमें भोजनसे उसकी मानसिकता (मानसिक प्रभाव) - को प्रभावित बताया गया है। सात्त्विक, शुद्ध एवं पवित्र आहारसे व्यक्ति शारीरिक-मानसिक एवं बौद्धिक रूपोंसे अपेक्षाकृत अधिक शीघ्र उन्नत अवस्थाको प्राप्त कर सकता है। अत: अनेक विद्वानोंने भोजनमें प्राय: सात्त्विक आहार लेनेपर ही अधिक जोर दिया है।

वेदोंमें भोजनकी स्तुति की गयी है। तथा बैठकर भोजन करनेका निर्देश दिया गया है। वेदोंके साथ ब्राह्मणग्रन्थोंमें उल्लेख है कि भोजन दो बार दिनमें करना चाहिये। वृक्षका लाल द्रवरस या वृक्ष काटनेपर जो स्राव निकलता है, उसे नहीं खाना चाहिये। बच्चा देनेपर गायका दूध १० दिनतक नहीं पीना चाहिये। वैदिक यज्ञके लिये दीक्षित व्यक्तिको होमके समाप्त होनेपर ही भोजन करना चाहिये, उसके पूर्व नहीं। इसी प्रकार आरण्यक-ग्रन्थोमें भी भोजन सम्बन्धी कतिपय प्रतिबन्धोंका स्पष्ट उल्लेख है।

छान्दोग्योपनिषद्में वर्णित उषस्ति चाक्रायणकी कथासे ज्ञात होता है कि भोजन न मिलनेपर (आपद्धर्ममें) उच्छिष्ट आदि भी खाया जा सकता है - चाहे वह निम्नजातिके व्यक्तिका जूठा भोजन ही क्यों न हो; ऐसे आपत्तिकालमें प्राणका बचाना कर्तव्य एवं धर्म हो जाता है; क्योंकि वह अमूल्य होता है। आहार शुद्ध होना चाहिये तथा भोजन करनेके पूर्व और पश्चात् दो बार आचमन करना चाहिये। भोजन सात्त्विक होना आवश्यक है। भोजनमें अन्नको देवता मानकर उसके संवर्धनकी कामना की गयी है तथा कहा गया है कि जिसका अन्न दूसरे व्यक्ति खायें वह पुण्यवान् होता है। अन्न सर्वश्रेष्ठ होता है; क्योंकि १० दिनतक उपवास करनेपर जीवित रहते हुए भी व्यक्ति दर्शन-मनन-श्रवण-

धर्मश्री प्रकाशन - साहित्य सूची

हिन्दी साहित्य : भजनगंगा, भागवत कथा सारामृत, सनातन विश्वधर्म, विश्वबंधुत्व, ज्ञानेश्वरी चिंतन, संस्कार पाथेय, संस्कार प्रेरणा, साङ्गवेद परिचय, चतुर्वेद परिचय, भक्तियोग (संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज का), संस्कार सुमन/ संस्कार सुधा, संस्कार ज्योति

मराठी साहित्य : योगवासिष्ठ प्रवचने, राजविद्या, श्रीरामकथा नवनीत, संस्कारांचे मूलमंत्र, श्रीगीता आणि मानसशास्त्र, अमृतवर्षा

कॅसेटस् / ऑडियो सी.डी. : स्तोत्र आरती, तू एक ही है, पुण्य प्रवाह हमारा, गोपी की आस, नाम संकीर्तन, जय वृंदावन धाम, गोविंद गोपाल गाते चलो, श्रीहरि संकीर्तन, वेदान्त और पुरूषार्थ, साधना पथ

व्ही.सी.डी. संच : श्रीमद् भागवत कथा (मराठी), महाभारत कथा (हिंदी), श्रीरामकथा, श्री ज्ञानेश्वरी कथा (पूज्य स्वामीजींके मधुर वाणीमें)

:: प्राप्तिस्थान ::

'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंटस्, सूर्यमुखी दत्त मंदिर के समीप, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११ ०१६.

दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९,

फॅक्स : (०२०) २५६७२०६९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोध-अनुष्ठान आदि अनुभव करनेमें असमर्थ रहता है। अतः अन्नकी ब्रह्मरूपसे उपासना करनी चाहिये। अन्नको देवता बताते हुए कहा गया है कि समस्त प्राणी अन्नको ग्रहण करके ही जीवित रहते हैं। उपनिषदूवर्णित राजा जनश्रुत पौत्रायणके गृहपर अतिथियोंके लिये बहुत-सा अन्न पकता था। मनुष्यद्वारा खाये हुए अन्नका परिणाम तीन प्रकारका होता है - स्थूलभाग मल, मध्यभाग मांस तथा सूक्ष्मभाग मन बनता है। इसमें शरीर प्राणके आश्रित है तथा प्राण शरीरके। जो मनुष्य यह जान लेता है कि वह अन्नमें ही प्रतिष्ठित है, वह प्रतिष्ठावान हो जाता है। अन्नवान्, प्रजावान् एवं पशुवान् हो जाता है। वह ब्रह्मतेजसे सम्पन्न होकर महान् बनता है। तथा कीर्तिसे सम्पन्न होकर भी महान् ही बनता है। (विहित उपवासको छोड़कर) अन्नका कभी भी परित्याग नहीं करना चाहिये। अन्नमें अन्न निहित है, अन्नवान् अन्नभक्षक होता है। अन्नकी वृद्धि करना प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य एवं व्रत होना चाहिये। अन्नसे ही इस पृथ्वीपर रहनेवाले समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्नसे ही समस्त प्राणी जीवित रहते हैं तथा अन्तमें अन्नमें ही विलीन हो जाते है और नष्ट होनेके पश्चात् अन्ततोगत्वा एकरूप हो जाते हैं।

सात्त्विक खाद्य पदार्थके रूपमें व्रीहि (धान), यव (जौ), तिल, माष (उड़द), अणु (सावाँ), प्रियंगु (काँगनी), गोधूम (गेहूँ), मसूर, खाल्व (वाल) और खाल्कुल (कुल्थी) - ये दस ग्रामीण अन्नका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त दूधके साथ घीमिश्रित चावल बनाया भोज्य, तिल-चावलकी खिचड़ी, उडद-चावलकी खिचड़ी आदि भोजन करनेका वर्णन है। इसके अतिरिक्त आँवला, बेर (कोल) तथा बेहेड़ेका भी वर्णन है। तथा आम्र (आम), गूलर एवं पिप्पलफल खानेका विधान भी है।

इस प्रकारसे स्पष्ट है कि सात्त्विक आहार वैदिक कालसे ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है तथा भोजनकी अतिशय शुद्धतापर स्पष्टरूपसे बल दिया गया है। कौन-सा भोजन लाभदायक है तथा कौन-सा हानिकारक है - यह स्पष्ट किया गया है। अतः सात्त्विक आहार एवं उसको किस प्रकार खाया जाय अथवा न खाया जाय, इस विषयपर अच्छा ज्ञान वैदिक साहित्योंसे जानना चाहिये।

(वेदानुगामी शास्त्रोंमें भी सात्त्विक आहारपर बहुत बल दिया गया है। आज आहारकी अशुद्धिसे संसार तमोगुणी और अपावन भावनावाला हो गया है। भक्ष्याभक्ष्यका विचार शिथिल हो गया है। अतएव मानव दानवताकी दिशामें बढ़ चला है। आवश्यकता है कि विश्वमङ्गलके लिये सात्त्विक आहारका अधिकाधिक प्रचार किया जाय। गीता (१७/८) में बतलाया गया है कि आयु, ओज, बल, आरोग्य, सुख और प्रीतिको बढ़ानेवाला रसीला, चिकना स्थिर एवं हृदयके लिये हितकारी भोजन सात्त्विक जनोंको प्रिय होता है। अतः हमे सात्त्विक भोजन कर सात्त्विक बनना चाहिये। तभी हम अपना तथा विश्वका कल्याण कर सकेंगे।

□ ■ □

कर्म का महत्व

वैदिक संस्कृति में कर्म के महत्व पर बड़ा बल दिया गया है। भौतिक और आध्यात्मिक, द्विविध जीवन-सिद्धि एवं श्रेय-कल्याण के लिये कर्म का सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वेदों की यह कर्म भावना प्रत्येक व्यक्ति और समस्त मानव समाज को कर्तव्यनिष्ठ होने तथा दायित्व वहन करने की ओर प्रवत्त करती है।

उपनिषदों में भी कर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार किया गया है। जो जैसा करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है। उपनिषदों का गंभीर चिंतन और परमसत्य का साक्षात्कार कर्मनिष्ठा पर आधारित है। अतः अपने-अपने कर्म में अभिरत होकर मनुष्य सफलता को प्राप्त कर सकता है।

- मधुसूदन रा. चंदुरकर (जोशी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामचरित मानस पारायण और गीता साधना शिविर, ढालेगांव

ज्ञानेश्वर गुरूकुल द्वारा आयोजित छठा गीता साधना शिविर ४ सितंबर से १० सितंबर २००४ तक भगवती गौतमी के पावन तट पर स्थित गीता भवन, ढालेगांव में प.पू. आचार्य स्वामी श्री किशोरजी व्यास के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

इस शिविर में १५० से अधिक साधकों ने भाग लिया। शिविर के कार्यकलापों को देखकर पारायण के लिये आये हुए सत्संग भाई-बहन भी शिविर में सम्मिलित हुए। प्रातः ४ बजे शंखध्वनि से प्रातः उत्थान, ५.०० बजे प्रार्थना, ६.०० बजे योगासन, ७.१५ बजे ध्यान, जब आचार्यश्री ध्यान कक्षा लेते तो साधकों को ऐसा अनुभव आया कि हम प्रभु के साथ एकरूप हो गये। ८.३० बजे आचार्यश्री का प्रवचन "क्यों शिविर में आना है, जीवन श्रेष्ठ बनाना है।" इस विषय को आचार्यश्री ने आए हुए साधकों को विस्तारपूर्वक समझाया। १२ से ५ बजे तक श्री कमलेश भैय्या के साथ साधकों के साथ हर्षोल्लास से मानस पारायण किया। सायं सत्र में आश्रम सेवा, योगासन, प्राणायाम, गीता पाठ, प्रवचन और विश्व देव की आरती कर दीपनिर्वाण होता था।

दि. ६ सितंबर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव भी बड़े धूम-धाम से मनाया गया। आचार्यश्री के निर्देशानुसार ९ सितंबर को शिक्षक दिन मनाया गया। सभी ने अपनी जिम्मेदारी अपने प्रतिनिधि को सौंपी। सभी का बड़ा ही सुखद अनुभव रहा है। डॉ. द्वारकाप्रसाद लड्डा को शिविर प्रमुख बनाया गया। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संचालित वेदपाठशाला आलंदी के दो और पुष्कर के पांच विद्यार्थियों ने शिविर में बड़ी अहम् भूमिका निभाई। इन छोटे-छोटे विद्यार्थियों ने शिविर का सूत्रसंचालन किया। साधकों को योगासन सिखाया। और पारायण के समय अपनी मधुर वाणी से सबको संमोहित कर दिया।

श्री. जयप्रकाश बिहाणी, श्री जानकीलाल लोया, श्री सीताराम मंत्री, श्री भंडारीजी व अन्य सभी कार्यकर्ताओं के परिश्रम से शिविर सफल हुआ। पारायण व शिविर के एकत्रीकरण का पहला अनुभव अविस्मरणीय रहा।

समझदारी

एक किसान के चार बेटे थे। उनकी बुद्धिमत्ता जांचने के लिए सभी बेटों को बुलाकर किसान ने एक-एक मुट्ठी धान दिया और कहा, 'इनका जो मर्जी हो, सो करना।'

एक ने उसे छोटी वस्तु समझा और चिड़ियों को फेंक दिया। दूसरे ने उसे खाने के उपयोग में लाया। तीसरे ने संभाल कर डिब्बे में रख दिया, ताकि कभी पिता मांगे उन्हें दिखा सकूं। चौथे ने उन्हें खेत में बो दिया और टोकरा भरा धान पिता के सामने लाकर रख दिया।

पिता ने बोने वाले को अधिक समझदार पाया और बड़ी जिम्मेदारियों के काम उसी के सुपुर्द किये। भगवान भी यही करता है। किसी भी वस्तु का सदुपयोग करना जिसने जीवन में सीख लिया, उसी को मनोवांछित सिद्धि मिली।'

आज के समाज में भी यही होता है, चाहे परिवार हो या समाज। जो व्यक्ति वस्तुस्थिति को समझकर अपनी जिम्मेदारी निभाने का प्रयास करता है, उत्पादकता बढ़ाता है, वही सम्मान पाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के लिये दानदाताओं की सूची

रू. ५,००० और अधिक (दि. ११/६/२००४ से १५/९/२००४ तक)

नाम	स्थान	दानराशि रू.
श्री बिहारीलाल करवा	इंदौर	७५०००
श्रीमती विजयाकुमारी चौधरी	कोलकाता	५११११
श्री जगदीश अग्रवाल	पुणे	५००००
श्री नवलकुमार कनोडिया	कोलकाता	२५०००
श्री सत्यनारायण अग्रवाल	सूरजपुर	२५०००
श्रीमती किरण पांडे	पुष्कर	११११११
श्री कैलाशनाथ केडिया	नेपाळ	११०००
श्री विशाल केले	पुणे	५०००
श्री सीताराम खैरनार	पुणे	५०००
श्री व्ही. के. पाटे	पुणे	५०००
श्री राजीव शिरोडे	पुणे	५०००
श्री नारायणजी वाणी	पुणे	५००१
श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल	पुणे	५०००
श्री डी. के. वाणी	पुणे	५०००
श्री व्ही. टी. भामरे	पुणे	५०००
श्री आर. आर. शिरोडे	पुणे	५०००
श्री श्याम कोतकर	पुणे	५०००
श्री प्रकाश वाणी	पुणे	५०००
श्री सुरेंद्र सावळे	पुणे	५००१
श्री रमणलाल चोरडिया	पुणे	७५००
सौ. कालिंदीताई सावळे	पुणे	५००१
श्री मुरलीधर शिरवाडकर	पुणे	५०००
श्रीमती स्मृति भावे	पुणे	७१००
श्रीमती अयोध्याबाई ह. झंवर	हिंगोली	५०००
डॉ. सत्यनारायण तापड़िया	हिंगोली	५०००
श्री व्ही. एन्. वाणी	धुळे	५०००
श्रीमती ऋचा भाटिया	दिल्ली	७१००
श्री सतीशचंद्र मलिक	दिल्ली	५१००
श्री ज्ञानचंद्र गुप्ता	दिल्ली	५१००
श्री लक्ष्मणदास गुप्ता	दिल्ली	५०००
श्रीमती प्रेमलता बंसल	दिल्ली	५१००
श्री राजगोपाल तोष्णीवाल	बीड	७१००
श्री दिलीप देशमुख	बीड	७१००
श्री अशोक सु. बजाज	बीड	७१००
श्रीमती शशि भार्गव	बीकानेर	५१००
श्री सुभाष मित्तल	बीकानेर	५०००
श्री रामकुमार भुतडा	पुष्कर	५००१
श्री केडमठप्रसादजी	नोखा	५१००
श्री आलोकजी अग्रवाल	तिरूपुर	५०००
श्री रामावतारजी तोडी	तिरूपुर	५०००
श्री आलोक गुप्ता	तिरूपुर	५०००
श्री ब्रजलाल काबरा	परभणी	५०००
श्रीमती राजकंवरबाई मणियार	परभणी	५०००
सौ. ताराबाई शि. झंवर	परभणी	५०००
श्री मुरलीधर प्रे. भांगडिया	परभणी	५०००
श्री मदनलाल करवा	परभणी	५०००
श्री बालप्रसाद झंवर	परभणी	५०००
डॉ. द्वारकादास लड्डा	परभणी	५०००
श्री किशनलाल दरक	परभणी	५०००
सौ. शारदादेवी जालान	गोरखपुर	५१००
श्री ओमप्रकाश जालान	गोरखपुर	५१००
श्री सुब्रत जालान	गोरखपुर	५१००
श्री रमेश पेठे	लातूर	५०००
श्री जयप्रकाश बा. खटोड	लातूर	७१००
श्रीमती कौशल्याबाई तापडिया	लातूर	५०००
डॉ. भागचंद मालाणी	सेलू	५०००
श्री नंदलाल परतानी	सेलू	५०००
श्रीमती सावित्रीबाई श्री. भुतडा	सेलू	५०००
श्री बन्सीलाल धूत	सेलू	५०००
श्री पुरुषोत्तम सोनी	नांदेड	५०००
कु. शीतल धूत	नांदेड	५०००
श्री बालकिशन मो. बाहेती	भांडूप	७१००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम	स्थान	दानराशि रू.	नाम	स्थान	दानराशि रू.
श्रीमती मधु तोष्णीवाल	मुंबई	५१००	श्रीमती शारदादेवी कंदोई	चंडोली	५१००
श्री जयनारायण मणियार	मुंबई	५०००	श्री कचरूलाल लाहोटी	जवळा बाजार	५१००
श्री कांतिलालजी शा. मालाणी	मोंढा	५०००	डॉ. विजयकुमार जाजू	माजलगांव	५०००
श्रीमती लक्ष्मीबाई गं. झंवर	मोंढा	५०००	श्री नंदलाल काबरा	बोरी	५०००
कु. कीर्ति सी. मंत्री	मोंढा	५०००	श्री हनुमानदास सोमाणी	कौसली	५०००
श्रीमती प्रेमलता पु. लोहिया	जालना	५०००	श्रीमती पुष्पादेवी पांडे	वनी	५०००
श्री सत्यनारायण बांगड	जालना	५०००	सौ. लीलाबाई रा. साबू	मंठा	५०००
श्री हनुमानप्रसाद अग्रवाल	कानपुर	५१००	श्री चंदुलाल रा. साबू	भुजंगवाडी	७१००
श्री कमलकिशोर राठी	नेपाळ	५१००	श्री रमेशलाल झंवर	अहमदनगर	७१००
श्री नागरमल अग्रवाल	वाराणसी	५१००	श्री शरदजी सोनी	येवला	७१००
श्री राजकुमारी बूबना	वाराणसी	५१००	सौ. नलिनी एस. नाईक	बेळगांव	५०००
श्रीमती शीलादेवी पंड्या	वाराणसी	५१००	श्री कृष्णमोहन शुक्ल	लखनऊ	५०००
श्री जगमोहनदास अग्रवाल	वाराणसी	५१००	श्री वसंत टिकेकर	चंद्रपुर	७१००
श्रीमती प्रतिभा गोयल	वाराणसी	५१००	श्री देविदास शिनकर	धुलिया	५०००
श्री अजय अग्रवाल	मऊ	५१००	श्रीमती चंदाबाई बूब	अमरावती	५०००
श्री दामोदरलाल ठरड	मऊ	५१००	श्री सीताराम म. बाहेती	वाशिम	५०००
श्रीमती राजकिशोरी सिंग	लखीसराय	५१००	श्री मुरारीलाल अग्रवाल	नानपारा	५१००
श्री गोपालकृष्ण कनोडिया	लखीसराय	५०००	श्री बाबुलाल मित्तल	नानपारा	५१००
श्रीमती सीतादेवी कनोडिया	लखीसराय	५१००	श्री प्रेमचंद सैनी	पानीपत	५१००
श्री सुब्रत जालान	साहेबजंग	६१००	श्री इंद्रचंद अग्रवाल	पडरौना	५१००
श्रीमती निर्मलादेवी गोयल	रोहतक	५१००	श्री हनुमानदास सा. अग्रवाल	कौसडी	५०००
श्री किसनलाल खेतान	सोहरतगढ़	५१००	श्री विशाल पडतानी	संगमनेर	५०००
श्रीमती दीप्ति सिकरिया	रायबरेली	५१००	श्री सीताराम रूंगठा	आमजगढ़	५१००

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्।

(अथर्व ७.५०.८)

मेरे दाएं हाथ में पुरूषार्थ है और मेरे बाएं हाथ में विजय है। मैं गाय, अश्व, धन और सुवर्ण को जीतनेवाला होऊँ अर्थात् पुरूषार्थ के द्वारा सभी प्रकार की श्री मुझे प्राप्त हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के लिये विदेश दानदाताओं की सूची
(दि. १.४.२००४ से)

नाम	स्थान	रकम (डॉ.) यूएस	रकम (डॉ.) कॅनेडियन
संत श्री ज्ञानेश्वर गुरूकुल	ब्राम्प्टन		२१०००
श्री. एम. डिझायर शेव	कॅनडा		२५०
जयपुर फाइनान्शियल सर्व्हिसेस	ब्रॉम्प्टन		३०००
श्री. देवकीनंदन शर्मा	ब्राम्प्टन		५००
श्री. इंद्रजीत मोहला	कॅनडा		१०००
श्री. जीवन कायंदे	कॅनडा		१०००
श्री. सुदर्शन बक्षी	कॅनडा		५००
श्री. होमेश देशपांडे	मोडेस्टो	२०१	
श्रीमती बिमला कुमार	मोडेस्टो	२०१	
श्रीमती संध्या भवन	मोडेस्टो	२००	
श्री. सूरज आर. मिश्रा	सालीदा	२००	
श्रीमती चंद्रिका प्र. नाथ	रिपॉन	४००	
श्री. जय बालाराम	ट्रेसी	२००	
श्री. विजय बैस	मोडेस्टो	२५१	
श्री. तिलक चोप्रा	योरबा लिंडा	२०१	
श्री. रमेश गोयल	ॲनाहिम	१०१	
श्री. जनक चोप्रा	जानक	२००	
श्रीमती स्मिता बब्तिवाले	मार्कसीटी	५१	
श्री. सचिंद्र गंगुपंताला	मोडेस्टो	२००	
श्री. रामजी नाम मंडाली	मोडेस्टो	१५०१	
श्रीमती वंदना तिलक	मंडविले	७५	
श्री. राज जैन	साउथवुड	२००	
श्री. शरद रेगे	न्यूयॉर्क	२५१	
डॉ. श्री. पुरूषोत्तम भांगडिया	लेविसबर्ग	२५१	
श्री. चमन गुप्ता	न्यूयॉर्क	५०१	
श्री. सुदेश शर्मा	लेवसियो	१०१	
श्रीमती सलानी जैन	न्यूयॉर्क	१००	

नाम	स्थान	रकम (डॉ.) यूएस
श्री. वसारित पठारकर	न्यूयॉर्क	१००
श्री. सुभाष जैन	न्यूयॉर्क	२००
श्री. मदन मोहन शर्मा	न्यूयॉर्क	२००
श्री. भारत पटेल	न्यूयॉर्क	२००
श्रीमती सविता कृष्णा	हैदराबाद	२००
श्री. दुर्गाप्रसाद मिश्रा	न्यूयॉर्क	१०१
श्री. चंद्रहास सी. मून	मोडेस्टो	२००
श्रीमती ज्योती मून	मोडेस्टो	१०१
श्री. भगवती प्रसाद	मोडेस्टो	१००
श्री. रमेशकुमार प्रसाद	मोडेस्टो	२००
डॉ. श्रीमती उषा कुमार	अमेरिका	१०१
श्री. एस. आर. शर्मा	मोडेस्टो	४००
डॉ. एस. अरूणा चोप्रा	मोडेस्टो	३०१
श्री. कमल सिंह	मोडेस्टो	२००
श्री. जैनन दत्त	मोडेस्टो	२००
श्री. साधु राम शर्मा	मोडेस्टो	१२००
श्री. रूद्र शर्मा	मोडेस्टो	३०१
श्री. चंद्रहास मून	मोडेस्टो	२००
श्री. लचमन सिंह	मोडेस्टो	२०१
श्री. मायकल मीता बिर्दझेल	मोडेस्टो	२००
श्रीमती कमलस्वाति बाबा	अमेरिका	२०१
श्रीमती मीना तारा प्रभु	न्यूयॉर्क	६००
श्री. पुनीत अरोरा	न्यूयॉर्क	२५०
श्री. राजिंद्र कुमार	व्हॅनकुवर	१०००० (रू.)
श्री. जियालाल सेठ	बर्नबे	१५००० (रू.)
श्रीमती तृप्ति वर्मा	व्हॅनकुवर	११५१ (रू.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'धर्मश्री' के सभी पाठकों हेतु विशेष अनुरोध

'धर्मश्री' के पाठकों को संपर्क सूची पिछले कई दिनों से अद्यावत् करने का प्रयास शुरू है। इससे पहले भी पाठकों से प्रार्थना की गई थी कि इस अंक की प्राप्ति के विषय में कुछ सुझाव हो (जैसे पते में परिवर्तन, अंक प्राप्त न होना, एक से अधिक अंक प्राप्त होना आदि) तो कृपया सूचित करें। (इस आवाहन के अनुसार जिन्होंने इसके बारे में पत्र लिखे है उसके लिये कार्यवाही की गई है) **फिर भी हम ऐसा देख रहे है कि नये पते के अभाव मे, पूरा पता न होने से, पिन कोड क्रमांक न होने से अनेक धर्मश्री अंक वापस लौट रहे है।** इस आवाहन के माध्यम से यही प्रयास एक बार किया जा रहा है। कृपया निम्न लिखित पर्चे पर आवश्यक जानकारी लिखकर भेजने का कष्ट करें। पता अधूरा होना अंक की अप्राप्ति का प्रमुख कारण है, अतः संपूर्ण पता (विशेष कर पिन कोड क्रमांक) अवश्य लिखें।

प्रति,

संपादक महोदय, 'धर्मश्री'

मैं 'धर्मश्री' मुखपत्र का नियमित रूप से सदस्य हूँ।

मुझे यह मुखपत्र मिल नहीं रहा है / मुझे निम्नलिखित नाम-पते पर एक से अधिक अंक प्राप्त हो रहे है।

कृपया निम्न लिखित नाम, पते पर अंक **भिजवाने का / न भिजवाने का** प्रबंध करें।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

(*कृपया अनावश्यक अंश काट दें।)

पूरा नाम : ____________________

संपूर्ण पता : ____________________

____

____

पीन कोड : ____________________

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संत ज्ञानेश्वर आश्रम
कॅनडा के हिंदी स्कूल
छात्र तथा अध्यापक
राष्ट्गीत गान करते हुए ।
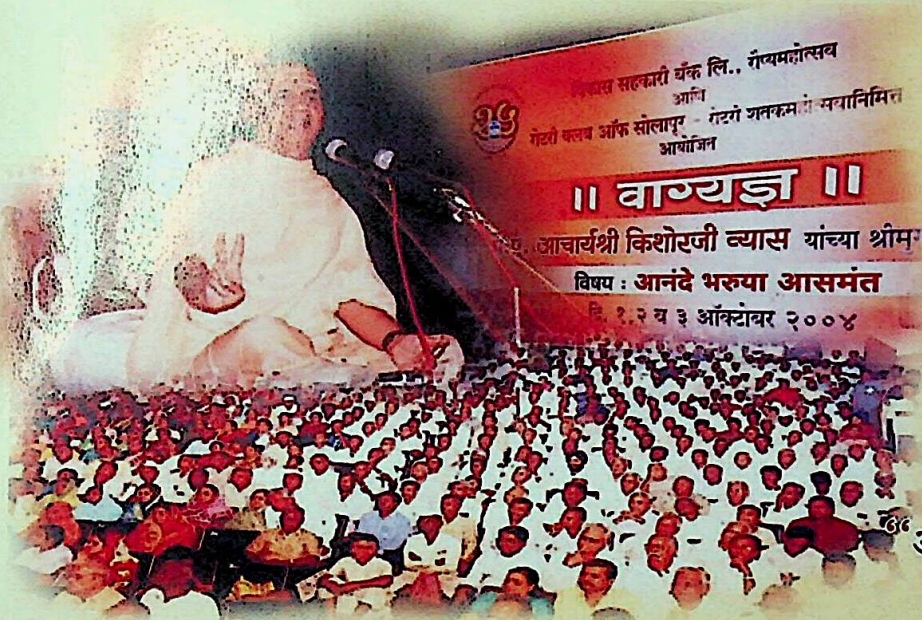
हुतात्मा स्मृति मंदिर
(सोलापुर) में
आचार्य श्री
की व्याख्यानमाला
"आनंदे भरू या आसमंत'

महेश वेद अध्ययन केंद्र,
पुष्कर में मा.राज्यपाल
श्री.खुरानाजी का स्वागत करते हुए
वे.मू.श्री.महेशजी नंदे एवं अन्य।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्वालितो प्रेममयः प्रदीपः।
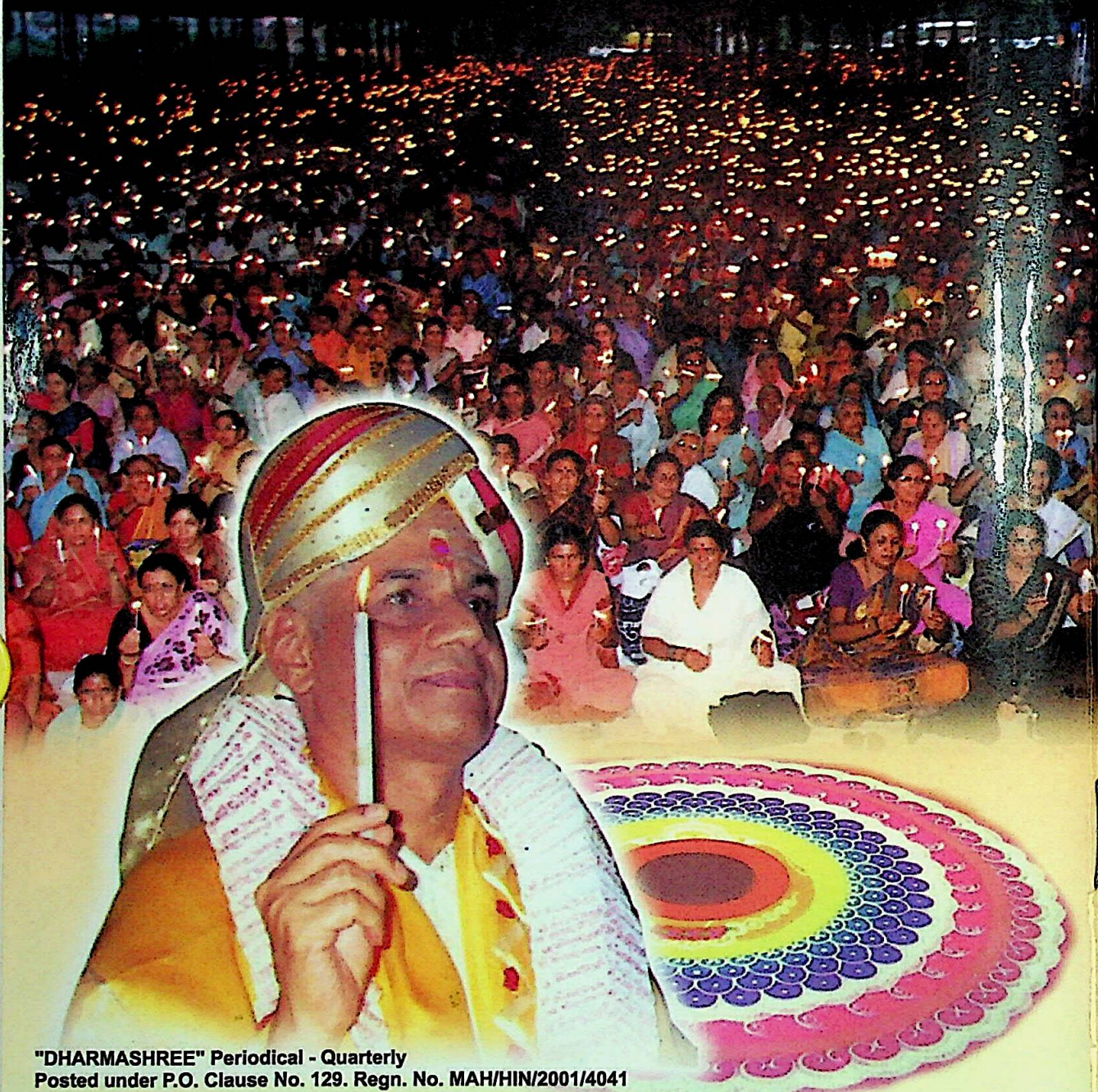
"DHARMASHREE" Periodical - Quarterly
Posted under P.O. Clause No. 129. Regn. No. MAH/HIN/2001/4041

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के लिए मुद्रक और प्रकाशक श्री राजकुमार बन्सीलाल अग्रवाल ने मंदार टेडर्स, ७५५ कसबा पेठ, पुणे - ४११०११ में मुद्रित कराकर महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, ३ मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग पुणे ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया। संपादक : डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के सदस्यों के अतिरिक्त प्रसाद - मूल्य प्रति अंक रू. ५/- मात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri